दैनिक

पुष्पांजली टुडे

MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 272 | ग्वालियर, रविवार, 23 जुलाई 2023 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

एनडीए में शामिल 38 पार्टियों में से 9 ने नहीं लड़ा था पिछला लोकसभा चुनाव, 16 दलों के पास नहीं है एक भी सांसद

लोकसभा चुनाव 2024 के मद्देनजर पिछले सप्ताह बीजेपी नीत एनडीए ने शक्ति प्रदर्शन किया. इसमें देश के लगभग सभी राज्यों से कुल मिलाकर 38 दलों ने हिस्सा लिया. एनडीए ने ये बैठक उसी दिन बुलाई, जिस दिन विपक्षी पार्टियों के 26 दलों ने इंडिया नाम के गठबंधन की घोषणा की थी. एनडीए के सभी सहयोगी दलों की बात करें तो उनके चुनावी ट्रैक रिकॉर्ड कुछ ज्यादा प्रभावी नहीं लग रहे हैं. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक एनडीए गठबंधन के 38 दलों में

से नौ पार्टियों ने 2019 में लोकसभा चुनाव नहीं लड़ा था. वहीं एनडीए गठबंधन के 16 दलों को पिछले आम चुनाव में एक भी सीट नहीं मिली थी, जबकि सात पार्टियों को केवल एक सीट से संतोष करना पड़ा था.पूर्वोत्तर राज्यों की कुल 11 पार्टी एनडीए मेंबीजेपी की नेतृत्व वाली एनडीए सरकार पिछले दो टर्म से अकेले ही लोगों का जनादेश हासिल कर केंद्र में सत्ता पर काबिज है. वहीं इस बार भी एनडीए गठबंधन केंद्र में सरकार बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ना चाहेगी. इसीलिए वो हर एक काम करना चाहेगी जिससे सत्ता परिवर्तन ना हो. बीजेपी का मकसद यही होगा कि वह एनडीए के सभी घटक दलों को आगामी लोकसभा चुनावों से पहले अलग-अलग भूमिका निभाने के लिए दे. एनडीए इसके जरिए ही महाराष्ट्र, बिहार और पंजाब सहित उन सभी राज्यों को निशाने पर रखेगी जहां पार्टी कमजोर पड़ सकती है. वहीं पार्टी पूर्वोत्तर राज्यों के लोकसभा सीटों को देखते हुए वहां के कुल 11 पार्टियों को एनडीए के साथ रखा है.

दिल्ली में दो बड़ी मस्जिदों को हटाने का आदेश! रेलवे का मंदिर-मस्जिद को नोटिस, कहा- 15 दिन में हटा लें अवैध कब्जा

पुरानी बंगाली मार्किट मस्जिद 250 साल और तकिया बब्बर शाह मस्जिद 500 साल पुरानी है. आजतक के अनुसार, रेलवे ने नोटिस में कहा कि 15 दिन के अंदर मस्जिद को नहीं हटाया गया तो रेलवे खुद एक्शन लेगा. रेलवे ने दावा किया कि ये मस्जिदें रेलवे की जमीन पर बनी हैं.

रेलवे ने मस्जिदों को जारी किया नोटिस-उत्तर रेलवे ने अपने नोटिस में कहा कि सूचित किया जाता है कि जिन्होंने रेलवे भूमि को अनाधिकृत रूप से अतिक्रमित किया हुआ है. आप लोग अनाधिकृत रूप से रेलवे की जमीन पर बने अनाधिकृत भवन मंदिर/मस्जिद/मजार को इस सूचना के 15 दिनों के अन्दर स्वेच्छा से हटा दें.

नहीं हटाया गया तो रेलवे लेगा एक्शन-रेलवे ने कहा कि अगर इन्हें खुद नहीं हटाया तो रेलवे प्रशासन की ओर से रेलवे अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत अनाधिकृत रूप से अतिक्रमित भवनों को हटा दिया जायेगा और इस प्रक्रिया में होने वाले नुकसान के लिए आप स्वयं जिम्मेदार होंगे, रेलवे प्रशासन जिम्मेदार नहीं होगा.

एमसीडी को भी दिया नोटिस-इसके अलावा उत्तर रेलवे के अधिकारियों ने एक मस्जिद के पास बने दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) के कार्यालय को भी नोटिस देकर जगह खाली करने का कहा है. उत्तर

रेलवे के इस नोटिस पर मस्जिद तकिया बब्बर शाह के सेक्रटरी अब्दुल गफ्फार ने कहा कि ये मस्जिद 400 साल से ज्यादा पुरानी है. इसी मस्जिद के पास में बने एमसीडी के मलेरिया दफ्तर को भी रेलवे ने खाली करने का नोटिस दिया है और यहां नोटिस चस्पा कर दिया गया है.इससे पहले भी इस साल अप्रैल में भूमि और विकास कार्यालय, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) और केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (सीपीडब्ल्यूडी) की ओर से संयुक्त अतिक्रमण विरोधी कार्रवाई में बंगाली बाजार में स्थित मस्जिद के एक हिस्से को गिरा दिया गया था.

हाई कोर्ट में 75 फीसदी जज जनरल कैटेगरी से, सरकार ने 2018 के बाद देश के सभी हाई कोर्ट में जिन जजों की नियुक्तियां हुई हैं,

. केंद्रीय विधि मंत्रालय ने एक सवाल के जवाब में लोकसभा में ये जानकारी दी है. संसद के मानसून सत्र के दूसरे दिन ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीनके नेता और हैदराबाद सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने सरकार से जजों की नियुक्तियों को लेकर सवाल पूछा था. ओवैसी ने ट्वीट कर इस बारे में बताया. ओवैसी ने ट्वीट कर बताया कि लोकसभा में मेरे प्रश्न के उत्तर में, सरकार ने खुलासा किया कि 2018 से 17 जुलाई, 2023 तक नियुक्त 604 हाई कोर्ट जज में से 458 न्यायाधीश सामान्य श्रेणी के हैं, जो 75त्न से अधिक है. लाइव लॉ की रिपोर्ट के अनुसार, ओवैसी ने विधि एवं न्याय मंत्रालय से पूछा था कि क्या ये सच है कि पिछले पांच वर्षों के दौरान सभी हाई कोर्ट में नियुक्त 79त्न न्यायाधीश ऊंची जातियों से थे, जो न्यायपालिका में पिछड़ों और अल्पसंख्यकों के असमान प्रतिनिधित्व को दर्शाता

है.ओवैसी के सवाल के जवाब में केंद्रीय कानून मंत्रालय ने बताया कि अनुशंसाकर्ताओं से मिली जानकारी के अनुसार, 2018 के बाद से अब तक नियुक्त 604 हाई कोर्ट जज में 458 सामान्य वर्ग के हैं. हालांकि, मंत्री ने प्रतिशत नहीं बताया लेकिन ये संख्या कुल नियुक्तियों का 75 प्रतिशत है.मंत्री ने ये भी बताया कि सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के न्यायाधीशों की नियुक्ति भारत के संविधान के अनुच्छेद 124, 217 और 224 के तहत की जाती है. इन नियुक्तियों में किसी तरह का आरक्षण नहीं दिया जाता है. हालांकि, उन्होंने बताया कि सरकार सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश और हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीशों से अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी), अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी), अल्पसंख्यकों और महिलाओं के उपयुक्त उम्मीदवारों पर विचार करके सामाजिक विविधता सुनिश्चित करने का अनुरोध कर रही है.

किस वर्ग से कितने जज-कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने बताया, 2018 के बाद सभी हाई कोर्ट में नियुक्त कुल जजों में 18 जज अनुसूचित जाति से संबंध रखते हैं. 9 जज अनुसूचित जनजाति, 72 अन्य पिछड़ा वर्ग और 34 अल्पसंख्यक श्रेणी से आते हैं.

अधर में पड़ा 545 पुलिस सब-इंस्पेक्टर का भविष्य, सिद्धारमैया सरकार ने दिए भर्तियों की न्यायिक जांच के आदेश

कर्नाटक की नव-निर्वाचित सिद्धारमैया सरकार के एक फैसले ने राज्य के 545 नव-नियुक्त पुलिस उप-निरीक्षक का भविष्य अधर में डाल दिया है. दरअसल बीजेपी के शासन काल में हुई इन भर्तियों में हुए कथित घोटाले की जांच के लिए सरकार ने एक न्यायिक आयोग का गठन किया है, जिसकी जांच हाईकोर्ट के एक रिटायर्ड जज करेंगे.कांग्रेस ने 545 पीएसआई की भर्ती में कथित अनियमितताओं और भ्रष्टाचार को लेकर तत्कालीन भाजपा सरकार को आड़े हाथों लिया था.

लॉरेंस बिश्नोई गैंग से फिर आया धमकी भरा कॉल, मलाड के व्यापारी से मांगे 20 लाख, कहा- जेल से बाहर आने के लिए चाहिए पैसे

मुंबई के मलाड इलाके में रहने वाले एक व्यापारी ने पुलिस को शिकायत दी है कि उससे लोरेंस बिश्नोई गैंग उगाही कर रहा है. व्यापारी ने बताया है कि उसको बीते दिन एक धमकी भरा कॉल रिसीव हुआ जिसमें उससे 20 लाख रुपये मांगे गए. सूत्रों ने बताया की शिकायतकर्ता व्यापारी को 20 जुलाई के दिन शाम को एक प्राइवेट नंबर से कॉल आया और कॉलर ने खुद को बिश्नोई गैंग का सदस्य बताया. कॉलर ने इसके बाद व्यापारी से 20 लाख रुपये की मांग की और कहा की उसके गैंग के लोग को जेल में हैं और उनको छुड़वाने के लिए उसे पैसे चाहिए. पुलिस सूत्रों ने बताया की व्यापारी की शिकायत के आधार पर अज्ञात शख्स के ख़िलाफ की धारा 385 के तहत मामला दर्ज करके जांच शुरू कर दी गई है.लोरेंस बिश्नोई फिलहाल पंजाब की बठिंडा सेंट्रल जेल में सजा काट रहा है. वह 11 जुलाई से फरीदकोट के स्थानीय गुरु गोबिंद सिंह मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में भर्ती किया गया था. उसे 15 जुलाई को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई थी. डॉक्टरों ने बताया कि जब उसको यहां लाया गया था तो उसको 105 डिग्री बुखार था. जब टेस्ट किया गया तो पता चला कि उसको डेंगू हो गया था. लॉरेंस के दाखिल होने के बाद बठिंडा और

फरीदकोट जिले की पुलिस को यहां की सुरक्षा में तैनात किया गया था. लेकिन लोरेंस के अस्पताल में भर्ती रहने के दौरान एक कांड हो गया. दरअसल वहीं से बंबीहा गैंग का एक गुर्गा सुरिंदर पाल बिल्ला शनिवार सुबह फरार हो गया. मामले की जानकारी मिलते ही पुलिस और प्रशासन में हडकंप मच गया. गौरतलब है कि बिश्नोई गैंग और बंबीहा गैंग में आपस में दुश्मनी है

पहले पति और बेटे की मौत देखी और अब बेटी के साथ यौन उत्पीड़न.., मणिपुर पीड़िता की मां ने सुनाई दरिंदगी की दास्तां

प्रातीय हिंसा प्रभावित राज्य मणिपुर में दो महिलाओं को बगैर कपड़ों के परेड कराने का वीडियो सामने आने के बाद से ही लोगों में गुस्सा भरा हुआ है. राजनेताओं से लेकर अभिनेताओं तक सभी ने इसकी निंदा कर आरोपियों को सख्त से सख्त सजा देने की मांग की है. अब इस मामले को लेकर नग्न घुमाई गई महिलाओं में से एक की मां का बयान सामने आया है. पीड़िता की मां ने , मेरे परिवार के अब कभी भी गांव लौटने की कोई संभावना नहीं है. हमारे घर जला दिए गए हैं, हमारे खेत नष्ट

हो गए हैं.÷ महिला को मां गहर सदमे में हैं और कुछ मिनट से ज्यादा कुछ नहीं बोल पाती हैं. उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा, ÷मणिपुर सरकार ने हिंसा को रोकने या लोगों की सुरक्षा के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठाए हैं.पति और बेटे को खो चुकी हैं पीड़िता की मां पीड़िता की मां इस हिंसा में अपने पति और बेटे को खो चुकी हैं. अपनी बेटी का पूरे गांव के सामने यौन उत्पीड़न होते हुए देख चुकी हैं. उनके पति और बेटे को भीड़ ने मार डाला. इसके बाद उनकी बेटी को 4 मई को सभी के सामने निर्वस्त्र किया गया

ममता बनर्जी या प्रियंका गांधी... 2024 में पीएम मोदी को कौन दे सकता है टक्कर? विपक्ष के पीएम फेस को लेकर सर्वे में चौंकाने वाला खुलासा

लोक सभा चुनाव 2024 के लिए दो बड़े गठबंधन की घोषणा हो चुकी है. एक 26 विपक्षी दलों का इंडिया नाम से गठबंधन है तो दूसरा सत्तारूढ़ एनडीए है. लेकिन सबके जहन में एक ही बात है कि आखिर मोदी के सामने विपक्ष का चेहरा कौन होगा. इसी सवाल को लेकर पिछले सप्ताह सी-वोटर ने एक सर्वे किया है, जिस पर लोगों ने बेहद हैरान करने वाले जवाब दिए हैं.

महिलाओं के खिलाफ अपराध में राजस्थान नंबर-1राजेंद्र गुढ़ा पर बीजेपी बोली- आवाज उठाने पर अपने मंत्री को कर दिया बर्खास्त

केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने शनिवार (22 जुलाई) को बीजेपी हेडक्वार्टर में प्रेस कॉन्फ्रेंस की और राजस्थान के सीएम अशोक गहलोत पर पलटवार कर उनसे इस्तीफा मांगा.ठाकुर ने कहा कि राजस्थान सरकार को महिला-महिला में भेद नहीं करना चाहिए, उन्होंने कहा कि क्या राजस्थान में अपराध के लिए अशोक गहलोत जी अपने पद से इस्तीफा देंगे.केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा, देश के कुछ राज्यों में महिलाओं के खिलाफ अपराध की घटनाएं बढ़ी हैं और कई राज्यों में इसके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई. बेगूसराय में जो हुआ वह हमारे सामने है, लेकिन मुख्यमंत्री

नीतीश कुमार ने इस पर एक शब्द भी नहीं बोला.महिलाओं के खिलाफ अपराध में राजस्थान नंबर वन राज्य बन गया है. अपराधियों के खिलाफ कोई कदम उठाने के बजाय, राज्य में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अपने एक मंत्री राजेंद्र गुढ़ा को बर्खास्त कर दिया.अनुराग ठाकुर ने कहा कि मेरा राजस्थान के सीएम से बस एक ही सवाल है कि राजस्थान की कानून व्यवस्था क्या सीएम की जिम्मेदारी है या नहीं? क्या वह राजेंद्र गुढ़ा के बयान के बाद इस्तीफा देंगे या नहीं. राजस्थान की घटनाओं पर अशोक गहलोत शर्मसार होते हैं या नहीं? खरगे और गांधी परिवार के लोगों से सवाल है कि क्या राजस्थान की जिम्मेदारी भूल गए हैं. क्या विपक्ष के नेता अपना प्रतिनिधिमंडल राजस्थान, बिहार और बंगाल भी भेजेंगे?वहीं जब उनसे पूछा गया कि वह मणिपुर पर चर्चा करने के लिए क्यों तैयार नहीं है, तो उन्होंने जवाब दिया कि बीजेपी सरकार सदन में मणिपुर और महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराध पर चर्चा करने के लिए पूरी तरह से तैयार है. उन्होंने आरोप लगाया कि विपक्ष खुद इन मुद्दों पर चर्चा नहीं करना चाहता है.

इस साल जून तक 87000 से ज्यादा भारतीयों ने छोड़ दी नागरिकता, विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बताई ये वजह

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने लोकसभा में भारत से विदेश जाने वाले भारतीयों को लेकर बहुत अहम जानकारी दी है. एस जयशंकर ने लोकसभा में बताया कि अब तक 87,000 से अधिक भारतीयों ने अपनी नागरिकता छोड़ दी है. एक सवाल का लिखित जवाब देते हुए विदेश मंत्री ने बताया कि ये संख्या जून 2023 तक दर्ज की गई है.एस जयशंकर ने बताया कि इन आकड़ों के साथ ही 2011 के बाद से 17.50 लाख से अधिक भारतीयों ने अपनी भारतीय नागरिकता छोड़ दी है. नागरिक छोड़ने वाले लोग अब उस देश के नागरिक बन गए हैं, जहां वे जाकर बसे हैं.जयशंकर ने कहा कि इनमें से कई ने व्यक्तिगत सुविधा की वजह से विदेशी नागरिकता लेने का विकल्प चुना है. इसके अलावा पिछले दो दशकों में वैश्विक कार्यस्थल की खोज करने वाले भारतीय नागरिकों की संख्या महत्वपूर्ण रही है. भारत दोहरी नागरिकता की पेशकश नहीं करता है. जिसके चलते जब भारतीय विदेश जाते है तो जिस देश में वे गए है, उसके लिए पीआर सुरक्षित करने के लिए उन्हें कभी-कभी अपनी भारतीय नागरिकता छोड़ने की आवश्यकता होती है.विदेश

मंत्री ने लोकसभा में कहा कि 2022 में 2,25,620 भारतीयों ने अपनी नागरिकता छोड़ दी जबकि 2021 में उनकी संख्या 1,63,370 और 2020 में 85,256 थी. वहीं 2019 में 1,44,017, 2018 में 1,34,561, 2017 में 1,33,049, 2016 में 1,41,603 भारतीयों ने अपनी नागरिकता छोड़ी. इसके अलावा 2015 में 1,31,489 और 2014 में 1,29,328 ने भारतीयों ने नागरिकता छोड़ दी.भारत छोड़कर विदेश में रहने वाले भारतीयों को कौन सा देश सबसे ज्यादा पंसद आ रहा है, इस बारे में विदेश मंत्रालय की आधिकारिक वेबसाइट पर दी गई जानकारी से अंदाजा लगता है. विदेश मंत्रालय की ऑफिशियल वेबसाइट के अनुसार, 2021 में कुल 78,284 लोगों को अमेरिकी नागरिकता मिल गई.इसमें बताया गया कि दूसरे नंबर पर ऑस्ट्रेलिया को भारतीय पसंद कर रहे हैं. 2021 के डेटा के मुताबिक 23,533 लोगों को ऑस्ट्रेलिया की नागरिकता मिली. इसके अलावा तीसरे नंबर पर कनाडा है. जहां 2021 में 21,597 लोग कनाडा के नागरिक बने. चौथे और पांचवें नंबर पर लोगों की पसंद यूके और इटली हैं.

चीन को उसी के घर में घेरेगा भारत! इंडियन नेवी चीफ आज वियतनामी नौसेना को गिफ्ट करेंगे आईएनएस कृपाण

भारतीय नौसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार शनिवार (22 जुलाई) को दक्षिण चीन सागर में एक मिलिट्री बेस पर वियतनामी नौसेना को एक ऑपरेशनल स्वदेशी जंगी जहाज कृपाण उपहार में देंगे. माना जा रहा है कि इस कदम से भारत चीन को उसी के घर में घेरने में

सक्षम होगा.अन्य पड़ोसियों की तरह चीन का वियतनाम के साथ भी जमीन को लेकर विवाद है. वियतनाम की उत्तरी सीमा चीन से लगती है और इसके पूर्व में दक्षिण चीन सागर है. भारत और वियतनाम के संबंध सौहार्दपूर्ण हैं क्योंकि 1979 के चीन-वियतनाम युद्ध में भारत ने वियतनाम की मदद की थी, जिसके चलते चीन को पटखनी का सामना करना पड़ा था.भारत की रणनीति चीन की तरह कभी विस्तारवाद की नहीं रही है लेकिन बेकाबू होते ड्रैगन को घेरने में वियतनाम को उपहार में दिया जाने वाला आईएनएस कृपाण काम आ सकता है, ऐसी उम्मीद की जा रही है. बता दें कि स्वदेशी रूप से निर्मित मिसाइल से लैस कार्वेट (छोटा जंगी जहाज) आईएनएस कृपाण 8 जुलाई को कैम रन्ह अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह पर पहुंचा था और वियतनामी पीपुल्स नेवी ने इसका स्वागत किया था. भारत से वियतनाम तक की आखिरी यात्रा में इस जंगी जहाज में तिरंगा शान से लहरा रहा था.

बीजेपी की प्रभावशाली महिला दावेदार डॉ श्वेता शर्मा

पुष्पांजली टुडे

जिला पंचायत गरियाबंद के प्रथम अध्यक्ष एवं शिक्षा मंडल रायपुर के पूर्व सदस्य, एवं भारतीय जनता पार्टी, तेजतर्रार वक्ता डॉक्टर श्वेता शर्मा का इन दिनों पूरे राजिम विधानसभा क्षेत्र में बैनर पोस्टर उनके कार्यकर्ता के द्वारा लगाया जा रहा है उनके समर्थन में और उनको विधानसभा की प्रमुख दावेदार बता रहे हैं, डॉ श्वेता शर्मा के द्वारा लगातर जनसंपर्क किया जा रहा है एवं कार्यकर्ताओं के बीच हनुमान चालीसा एवं कैलेंडर एवं पार्टी के 15 साल के कार्यकाल में किए गए कार्यों का विवरण, लगातार दे रहे हैं, जो कार्य जो भाजपा के कार्यकाल में विकास छत्तीसगढ़ के हुए हैं उसमें भाजपा का अहम योगदान है, डॉक्टर श्वेता शर्मा सबसे शिक्षक शिक्षा के दृष्टि से देखें तो डॉ श्वेता शर्मा बेंगलुरु से अंग्रेजी में पीएचडी का डिग्री हासिल किए हैं, उनके जिला पंचायत अध्यक्ष का कार्यकाल काफी लोकप्रिय रहा है लगातार एक बार रायपुर से जिला पंचायत सदस्य और गरियाबंद जिला बनते ही प्रथम जिला पंचायत अध्यक्ष बने हैं, उनके जिला का जिला पंचायत अध्यक्ष के कार्यकाल में काफी क्षेत्र का विकास हुआ है और आने वाला समय में विधानसभा में उनको पार्टी से उम्मीद है कि फिर पार्टी एवं टिकट देकर के फिर से सेवा का मौका देगें, क्षेत्रीय माहौल देखे तो डॉक्टर श्वेता शर्मा का युवाओं एवं महिलाओं एवं सभी के बीच अच्छे फीडबैक मिल रहे हैं उनका कोई विरोध नहीं हो रहा है, टिकट देने से पहले भारतीय जनता पार्टी अपना गोपनीय सर्वे कर आएगी उसके बाद टिकट वितरण में श्वेता शर्मा का नाम आना तय है ऐसा उम्मीद लग रहा है,

खरगोन जिला मुख्यालय पर कोर्ट परिसर पर रक्तदान महादान एवं स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का हुआ आयोजन

खरगोन जिले से मुन्ना खान पुष्पांजली टुडे

खरगोन कोर्ट परिसर पर रक्तदान महादान एवं स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सुनील कुमार जैन उपस्थित होकर खरगोन न्यायाधीशों के समकक्ष दीप जलाकर मां सरस्वती के फोटो पर माल्यार्पण कर रक्तदान का शुभारंभ किया प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सुनील कुमार जैन द्वारा खरगोन न्यायाधीशगण, अधिवक्तागण के समकक्ष चर्चा करते हुए कहा रक्तदान करने से किसी की भी जिंदगी बच सकती है अभी हाल ही बस दुर्घटना में घायलों को रक्त की जरूरत प? गई थी रक्तदान करना एक महादान है आज रक्तदान के साथ साथ स्वास्थ्य परीक्षण भी आप का हो रहा

प्रधान न्यायाधीश सुनील कुमार जैन व खरगोन न्यायाधीशों द्वारा रक्तदान करने वाले नागरिकों को फुलमाला पहनकर एक पौधा देकर प्रशंसा पत्र देकर सभी को सम्मानित किया गया कार्यक्रम स्थान तहसील विधिक सेवा समिति, सिविल न्यायालय खरगोन में रखा गया कार्यक्रम में जिला प्रशासन में जिला स्वास्थ्य अधिकारी सहित पुरी टीम आज खरगोन न्यायालय परिसर में रक्तदान महादान में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इस दौरान विशेष न्यायाधीश श्री शमरोज खान, सचिव श्री नरेन्द्र पटेल, न्यायाधीश श्री गुलाब मिश्रा, श्री अनिल दंदेलिया, कपिल सोनी, श्रीमी पद्मा राजौरे तिवारी, श्रीमती अंजली पटेल, श्री राजेन्द्र कुमार अहिरवार, श्री राज पाण्डे, श्रीमती प्रियंवदा शुक्ला, कु. साक्षी शुक्ला, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी श्री मोहन सिंह सिसोदिया एवं न्यायालय व चिकित्सालय के समस्त कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

शोक संवेदना व्यक्त करने पहुंचे ,दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री जाटव

पुष्पांजली टुडे संवाददाता मालनपुर पहलवान सिंह राजावत

मालनपुर पूर्व विधायक एवं संत रविदास हथकरघा विकास निगम के अध्यक्ष(राज्य मंत्री दर्जा प्राप्त) रणवीर जाटव शनिवार को मालनपुर क्षेत्र के हरीराम का पुरा और लहचूरे के पुरा मैं शोकाकुल परिवारों के बीच शोक संवेदना व्यक्त करने पहुंचे द्य लहचूरा का पुरा निवासी महेंद्र जाटव के पिताजी बालाराम का निधन हो गया था और हरीराम का पुरा कुशवाहा कॉलोनी निवासी रमेश चौरसिया के ताऊ बंसीलाल का निधन हो गया था शनिवार को राज्यमंत्री ने दोनों ही शोकाकुल परिवारों के बीच पहुंचकर शोक संवेदना व्यक्त की एवं परिजनों को

ढाढस बंधायाद्य इस बीच लहचूरे का पुरा के ग्रामीणों ने उन्हें गांव में हो रही विद्युत समस्या से अवगत कराया उन्होंने तत्काल अधिकारियों को फोन पर विद्युत व्यवस्था दुरुस्त कराने के निर्देश दिए

इन्दौर संभाग मंत्री हुसैन के सानिध्य में सफाई कामगारों ने स्वस्थ विभाग के अधिकारी का फु ल माला पहनाकर जोरदार स्वागत किया गया

खरगोन जिलें मुन्ना खान पुष्पांजली टुडे

अखिल भारतीय सफाई मजदूर कांग्रेस ट्रेड यूनियन 7262 के इन्दौर संभाग मंत्री शाकीर हुसैन के सानिध्य में सफाई कामगार आफीस में रियाजुदीन शेख पार्षद एवं अल्पसंख्यक प्रदेश अध्यक्ष की उपस्थिति में

खरगोन शहर के सफाई कामगारों ने बरसात को देखते हुए ओर साफ सफाई करने में हो रही परेशानियां को देखते हुए बरसादी कपड़ों की मांग एवं बात को अखिल भारतीय कांग्रेस मजदूर ट्रेड युनियन 7262 के ?इन्दौर संभाग मंत्री शाकीर हुसैन को बताया गया इस समस्या के लिए सफाई कामगारों के बरसादी कपड़ों के लिए स्वास्थ्य विभाग नगर पालिका खरगोन के अधिकारी प्रकाश चित्ते को बताया गया संभाग मंत्री शाकीर हुसैन ने प्रकाश चित्ते अधिकारी द्वारा सफाई कामगारों की समस्यायों को गंभीरता से लिया गया ओर तत्काल प्रभाव से नगर पालिका खरगोन ष्टस्ह्र को अवगत कराया गया ओर सफाई कामगारों के इन्दौर संभाग मंत्री शाकीर हुसैन की अथक प्रयासों से नगर पालिका खरगोन स्वास्थ्य अधिकारी प्रकाश चित्ते के द्वारा तत्काल प्रभाव से बरसाती कपड़े वितरण किया गया इसी बीच सफाई कामगारों ने आज शनिवार को अपने कार्यकाल में सफ़ाई कामगारों के इन्दौर संभाग मंत्री शाकीर हुसैन की उपस्थिति में सफ़ाई कामगारों के द्वारा प्रकाश चित्ते का फुल माला पहनाकर जोरदार स्वागत किया गया उपस्थित संभाग मंत्री शाकीर हुसैन रियाजुदीन शेख रमजान खान आसमा खान चंदु खान सोनु खान हरिओम भाई करण रोकड़े चेतराम निरज भाई सलमान अबरार खान सलमात खान आशिफ खान जिला मंत्री पप्पू खान कार्यवाहक अध्यक्ष सोहेब खान सेजु खान उपस्थित रहे

प्रेम कुमार विश्वकर्मा बने कांग्रेस लौह,काष्ठ कला प्रकोष्ठ के जिला उपाध्यक्ष

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक पुष्पांजली टुडे

दबोह- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ जी के निर्देशानुसार तथा जेपी धनोपिया के अनुमोदन पर दबोह के कॉंग्रेस के युवा नेता प्रेम कुमार विश्वकर्मा को कांग्रेस के लौह एवम काष्ठ कला प्रकोष्ठ का जिला उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया है।उनको उपाध्यक्ष पद पर मनोनीत होने पर कॉंग्रेस के बरिष्ठ नेताओ ने उन्हें बधाई दी है।वहीं प्रेम कुमार ने लहार विधायक व नेता प्रतिपक्ष

डॉ.गोविंद सिंह का आभार जताया है उन्होंने कहा कि कॉंग्रेस पार्टी के साथ कदम से कदम मिलाकर खड़ा हूँ।वहीं प्रेम कुमार को बधाई देने बालो में नप अध्यक्ष प्रतिनिधि नरेंद्र दुधारिया,उपाध्यक्ष चौ.हाकिम सिंह,विधायक प्रतिनिधि शिवनारायण दुबे,कार्यालय प्रभारी राजेन्द्र खेमरिया,माधव यादव,शेरे पठान,सुधीर तिवारी पार्षद,शिवकुमार गुप्ता(पूर्व नगर अध्यक्ष युवक कॉंग्रेस),विनय बिलैया,चंद्र प्रकाश झा आदि नेता शामिल हैं।

ग्राम पंचायत भैसवार जनपद सोहावल विधानसभा रैगांव में प्राचीन शिवालय डांडी बाबा आश्रम रोड बीहिन

पुष्पांजलि टुडे राजेश कुमार तिवारी

सतना।ग्राम पंचायत भैसवार जनपद सोहावल विधानसभा रैगांव में प्राचीन शिवालय डांडी बाबा आश्रम में कोई भी रोड का निर्माण नही करा सका डांडी बाबा आश्रम बहुत ही सिद्ध एवं प्राचीन शिवालय है क्षेत्र के कई कई गांव के लोग भगवान भोलेनाथ का दर्शन करने आते हैं और भगवान भोलेनाथ से आस्था रखते हैं जबकि वर्तमान सरपंच अनीता के द्वारा रैगांव विधायक कल्पना वर्मा जी तथा सांसद महोदय सत ना को कई बार पत्राचार भी किया गया पत्र के दौरान विधायिका कल्पना वर्मा जी के द्वारा डांडी बाबा आश्रम हेतु रोड निर्माण शौचालय लाइट हेतु घोषणा की गई तथा बोला गया की ञ्ज स्करवाए फंड मैं पंचायत खाते में ट्रांसफर कर दूगी लेकिन आज दिनांक तक कोई फंड ट्रांसफर नहीं हुआ और न ही ग्राम पंचायत भैसवार में सामुदायिक भवन दिया गया यदि ऐसा रहा तो चुनाव के दिन नजदीक है ये ग्रामीणों कहना है की जो हमारे गांव के विकास में साथ न दे तो वो किस काम का यदि हमारे ग्राम की मांगे पूरी नही की गई तो इसका परिणाम चुनाव में देखने को मिलेगा जबकि अन्य पंचायतों को विधायक जी के द्वारा दिया जाता है लेकिन भैसवार के नाम से बात करने में विधायक जी हिचकिचाती है इस मैटर में विधायक जी ध्यान दे और अतिशीघ्र पूरी करे

सीएम हेल्प लाईन शिकायतो के निराकरण मे भिण्ड जिले का अब तक का उत्कृष्ट प्रदर्शन

विगत एक साल में निराकरण का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

पंकज त्रिपाठी दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । माह जून - 2023 की शिकायतों के निराकरण में सन्तुष्टी के प्रतिशत में प्रथम स्थान पर जिलेवार ग्रेडिंग में वेटेज के आधार पर 85.22 प्रतिशत के साथ 05 वे स्थान पर।पुलिस अधीक्षक मनीष खत्री एवं उनकी टीम द्वारा प्रत्येक शिकायतकर्ता से व्यक्तिगत सम्पर्क कर सीएम हेल्प लाईन शिकायतों का निराकरण कराया गया।मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के द्वारा प्रदेश में चलायी जा रही बहुआयामी योजना सीएमहेल्प लाईन न. 181 के तहत समस्त सहकारी विभागो में आमजन को समय पर सहायता ना मिलने की स्थितियों में आमजन सीधे सीएमहेल्प लाईन न. 181 पर शिकायत

कर अपनी समस्या बता सकता है। उक्त शिकायतकर्ता के द्वारा की गयी शिकायत को सम्बन्धित विभाग को स्थानान्तरित कर उसके जल्द से जल्द निकाल हेतु वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा परिवेक्षण किया जाता है। इसी प्रकार पुलिस से सम्बन्धित शिकायतों का पूरा लेखा-जोखा पुलिस अधीक्षक कार्यालय में रखा जाता है,जिसमें पुलिस अधीक्षक मनीष खत्री एवं उनकी टीम द्वारा प्रत्येक शिकायत का बारीकी से अवलोकन किया गया, साथ ही प्रत्येक शिकायतकर्ता से सम्पर्क किया जाकर उनके द्वारा बतायी गयी समस्याओं का तत्काल निराकरण कराया गया जिसके परिणाम स्वरुप जिला भिण्ड माह जून- 2023 के निराकरण में प्रदेश में 05 वे स्थान पर (85.22 प्रतिशत) आया है, जो जिला भिण्ड का विगत 01 वर्ष के निराकरण में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा है, इसी क्रम में माह जून-2023 में दर्ज की गई शिकायतों का सन्तुष्टी पूर्वक निराकरण 55.12 प्रतिशत रहा है,जो प्रदेश के जिलो में (जून-2023 में दर्ज की गई शिकायतों में) सन्तुष्टी के प्रतिशत में प्रथम स्थान पर है।

उक्त उपलब्धी प्राप्त होने पर भिण्ड पुलिस अधीक्षक मनीष खत्री ने जिले के समस्त अनुविभागीय अधिकारी पुलिस को प्रशंसा से एवं समस्त थाना प्रभारी / थानों में उक्त कार्य हेतु पदस्थ कर्मचारियों तथा पुलिस अधीक्षक कार्यालय की शिकायत शाखा में पदस्थ कर्मचारियों को 500 रुपये के नगद पुरुष्कार से पुरुष्कृत किया है ।

कांग्रेस लिमिटेड कंपनी मति भ्रम की शिकार सभी सिंधिया फोबिया के शिकार : दुबे

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । कांग्रेस की सभा फरेबियों के जमघट के रूप में हुई,प्रियंका गांधी को पता होना चाहिए सिंधिया परिवार की विचार धारा हमेशा जन सेवा की रही है वो कभी नही बदलती, उक्त वक्तव्य भाजपा के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य डॉ रमेश दुबे ने कही, उन्होंने कहा कि जहां वो माला चढ़ा कर आई है वो वीरांगना का समाधि स्थल सिंधिया परिवार ने ही बनवाया है,प्रियंका पहले इतिहास को जाने फिर कुछ बोलें।रमेश दुबे ने कहा अस्तित्व खो चुकी कांग्रेस कंपनी की तुष्टि करण की राजनीति की वजह से ये दुर्गति हुई है।श्री दुबे ने कहा की

कांग्रेस कंपनी के लोग श्री सिंधिया के नाम पर ही राजनीति कर रहे है उन्हे ये मालूम होना चाहिए की कांग्रेस में कुछ लोग नकाब पहनकर कुछ भी बोलते हैं लेकिन उनकी सच्चाई कुछ और ही है। प्रियंका वाड्रा जो गांधी नाम की ओढ़नी पहन कर सोच रही है की चंबल की जनता उनकी बातो से प्रभावित हो जाएगी यह उनका मति भ्रम है ।दुबे ने कहा प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्व में देश का मान और सम्मान शिखर तक पहुंचाया है ,देश के आम नागरिक का आत्मविश्वास लौटाया है और ये मौका परस्त कंपनी के प्रोपराइटर झूठ फेलाने का असफल प्रयास कर रहे है ।

चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे अंबुज बागरी की तुलसी सबरी जल प्रपात में डूबने से हुई मौत

पुष्पांजलि टुडे राजेश कुमार तिवारी

सतना।मारकुंडी थाना क्षेत्र अंतर्गत तुलसी - शबरी प्रपात में बीते दिन ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट में अध्ययन कर रहे अंबुज बागरी अपने दोस्तों के साथ तुलसी सबरी जल प्रपात गया तुलसी सबरी जलप्रपात के कुंड में अंबुज बागरी का पैर फिसल जाने से गहरे कुंड में गिर गया साथ में गए दोस्तो ने आ कर सूचना दिया स्थानीय प्रशासन और गोताखोरों की मदद से अंबुज बागरी के सबको खोजा गया परंतु शव नहीं मिला कुछ समय के लिए कुछ

सीमा विवाद की स्थिति निर्मित हुई शव न मिलने के कारण परिजन आक्रोश में आकर कर रोड जाम कर दिया सूचना मिलते ही मजगामा थाना प्रभारी आदित्य सेन और मजगामा एसडीएम जितेंद्र वर्मा मौके पर पहुंचकर समझाइश दी और जाम खुलवाया इसके बाद एमपी यूपी पुलिस की संयुक्त टीम ने कुंड से अंबुज बागरी का शव निकाला शव मिलने के बाद यूपी पुलिस मर्ग कायम कर जांच कर रही है

भक्तामर महाअनुष्ठान से दु:ख-दर्द दूर होते है मुनि श्री राजपद्मसागरजी म.सा.

पुष्पाजंली टुडे

बेंगलुरू।एलएन पूरम, श्रीरामपूरम् जे.पी.पी श्रमणी भवन में अनेक श्रद्धालुओं को समझाते हुए मुनि श्री राजपद्मसागरजी म.सा ने कहा कि धारा नगरी में महाप्रभावशाली प.पू आचार्य देव श्री मानतुंगसुरीश्वरजी म. साने इस महान स्तोत्र की रचना की थी धारा नगरी के राजा भोज थे. उन्होने आचार्य भगवंत को बेडीओ से बांधकर ताला लगाकर के उनको एक कमरे में बंध करवा दिया, और तब जाकर आचार्य श्री मानतुंगसूरीश्वरजी महाराजाने भक्तामर स्तोत्र के द्वारा असि-असि-कृषि की शिक्षा देने वाले इस अवसर्पिणी काल के प्रथम राजा, प्रथम यति घर, और प्रथम तीर्थकर

श्री ऋषभदेव परमात्मा की स्तुति की की और जैसे-जैस एक-एक श्लोको की रचना होती गई, वैसे-वैसे आचार्य भगवंत को बेडीओ से बांधा था वो एक-एक बेडीआ तूटती गई, इस प्रकार 44 बेडीया तूट गई और वहां पर धारा नगरी में जिनशासन की महान प्रभावना हुई, एसे भक्तामर स्तोत्र का अनुष्ठान करने से ऐसे शरीर में कीसी भी प्रकार की कोई पीडा-रोग- सिरदर्द- और मान-सन्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति के लिए है यह महा प्रभावशाली अनुष्ठान मुनि श्री श्रमणपद्मसागरजी म. सा ने कहा कि अरिहंत परमात्या की जलपूजा करते-करते शरीर में रहे हुए कुष्ठ रोग- चर्मरोग विगरे बाह्य रोग तो मीटते ही है, पर जो अनादि काल से आत्मा पर लगे हुए कर्म - मल वो भी दूर होते है- 23 जुलाई रविवार के दिन महाप्रभावक भक्तामर अनुष्ठान है जे.पी.पी श्रमणी भवन दूसरे फ्लोर सुबह 8 बजे होगा

संतो के उपदेश से अज्ञान होता है दूर : शीतल संत राजाराम

पुष्पांजली टुडे /नारायणलाल सेंणचा

बेंगलुरू ।सीरवी समाज एच.एस.आर ले आऊट के तत्वाधान में शनिवार को चातुर्मास विराजित संत शीतल राजाराम महाराज ने अपने प्रवचन में कहा की दुनिया में रहते हुए दो चीजों को कभीं नहीं भूलना चहिए. न भूलने वाली चीज एक तो परमात्मा और दूसरी मौत. भूलने वाली दो बातों में से एक है ङ्क तुमने किसी का भला किया तो उसे तुरंत भूल जाओ और दूसरी बात ङ्क

किसी ने तुम्हारे साथ अगर कभी कुछ बुरा भी कर दिया तो उसे तुरंत भूल जाओ । बस, दुनिया में ये दो ही बातें याद रखने और भूल जाने जैसी हैं। इस अवसर पर वडेर के उपाध्यक्ष मांगीलाल चोयल, सह-सचिव केनाराम मुलेवा, सह-कोषाध्यक्ष बाबूलाल सोलंकी एवं कार्यकारिणी सदस्य मांगीलाल सोलंकी, गेनाराम सेंणचा नवयुवक मंडल के अध्यक्ष महेंद्र राठौड़ सचिव मदनलाल राठौड़, भीवाराम पवांर, टीकमराम आगलेचा मिडिया प्रभारी किशोर राठौड़ सहित महिला मंडल गेर मंडल के बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

अम्बाह पुलिस ने दो चोरो को मय मशरूका के किया गिरफ्तार...

केशब पंडित जी अम्बाह...

अम्बाह... पुलिस अधीक्षक शैलेन्द्र सिंह चौहान द्वारा मुरैना जिले में गम्भीर एवं सम्पत्ति अपराधो मे आरोपियो की धरपकड एवं उनके शीघ्र निराकरण हेतु चलाये जा रहे है अभियान के अन्तर्गत अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रायसिंह नरवरिया जी के निर्देशन में तथा अम्बाह एसडीओपी परिमाल सिंह मैहरा जी के मार्गदर्शन मे थाना अम्बाह के अप.क्र. 466/23 धारा 457,380 ताहि के आरोपी गण को मुखबिर की सूचना पर से जग्गा चौराहे से गिरफ्तार कर चोरी गये मोबाइल जिसमे एक रियल मी कम्पनी का स्मार्ट फोन व एक नोकिया कम्पनी का कीपेड मोबाइल कीमती करीबन 10,000/- रूपये जप्त किये गये बाद आरोपीगणो को आज दिनांक 22/07/23 को माननीय न्यायालय अम्बाह जे. आर. पर पेश किया गया ।उक्त कथन में थाना प्रभारी बीरेश कुशवाह, उपनिरी.पारथसिह परिहार जितेन्द्र शर्मा बिबेक तोमर बिबेक शर्मा418 रामवीर सिंह गुर्जर, आर. जोगेन्द्र भदौरिया, आर. सतेन्द्र गुर्जर, आर. नरेंद्र मौर्य, आर. पुष्पेन्द्र राजावत, आर. धर्मेन्द्र की अहम भूमिका रही।

ग्वालियर आमसभा में भिंड जिले के कार्यकर्ताओं ने लिया बढ़चढ़ कर भाग सभी का आभार :मानसिंह कुशवाह

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । जिला कांग्रेस कमेटी जिलाध्यक्ष मानसिंह कुशवाहा ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से ग्वालियर में राष्ट्रीय महासचिव श्रीमती प्रियंका गांधी बडेरा की विशाल आमसभा में भिण्ड जिले के कार्यकर्ताओं ने बढ़चढ़ कर लेने पर आभार व्यक्त किया है ।श्री कुशवाहा ने जारी प्रेस नोट में कहा कि मध्यप्रदेश विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष डॉक्टर गोविंद सिंह के नेतृत्व में गोहद विधायक मेवाराम जाटव,पूर्व मंत्री भिण्ड चौधरी राकेश सिंह,अटेर के पूर्व विधायक हेमंत कटारे,भिण्ड दतिया के पूर्व लोकसभा प्रत्याशी देवासीष जरारिया एवं सभी प्रदेश

के पदाधिकारी,जिला कांग्रेस के पदाधिकारी, विभाग, मोर्चा संगठन के अध्यक्ष व पदाधिकारीगण, मंडलम, सेक्टर व भिण्ड जिले के कांग्रेस के कार्यकर्ता जिन्होंने बढ़कर भाग लिया उन सभी लोगों का दिल की गहराइयों से बहुत-बहुत धन्यवाद और आभार व्यक्त करना चाहता हूं।श्री कुशवाहा ने कहा कि सभी के सहयोग से ग्वालियर मेला ग्राउंड में कांग्रेस पार्टी ने जो इतिहास रचा है,सभी कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के सहयोग से संभव हो पाया । जिला कांग्रेस कमेटी जिला अध्यक्ष ने कहा कि वह पार्टी जिलाध्यक्ष होने के नाते सभी नेता व कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त करते है।

स्वच्छ सर्वेक्षण 2023 की तैयारियो को दृष्टिगत रखते हुये अधीक्षण यंत्री ग्वालियर ने गोहद नगर पालिका एवं मेहगांव नगर परिषद का किया औचक निरीक्षण

दैनिक पुष्पांजली टुडे

गोहद/ स्वच्छ सर्वेक्षण 2023 का फील्ड सर्वे होने से पूर्व आयुक्त महोदय नगरीय प्रशासन भोपाल द्वारा नियुक्त किये जिला नोडल अधिकारी अधीक्षण यंत्री श्री ब्रजेश करैया जी निकायों की स्वच्छ सर्वेक्षण की तैयारियों का निरीक्षण करने नगर पालिका परिषद गोहद पहुचे। अधीक्षण यंत्री गोहद नगर द्वारा वेस्ट मटेरियल से तैयार किये गये 3क्र पार्क पहुँचे जहाँ पार्क संचालित मिला। नेकी की दीवार, झोला बैंक, सेंटर में सुधार करने के निर्देश दिये। सार्वजनिक शौचालय, प्लांट देखे। जिसमे निकाय की तैयारियाँ अव्वल मिली। प्लांट को देखकर बहुत ही खुश हुये। करैया जी ने नगर के नाले एवं नालियाँ देखी जिनमे कचरा तैरता हुआ मिला। नाले एवं नालियों की सफाई करने के लिए उपयत्री आकाश त्यागी जी को निर्देश दिये कि आप तत्काल निकाय के नाले एवं नालियों की सफाई कराना सुनिश्चित करे। निरीक्षण के दौरान नगर के आम नागरिको से नगर की स्वच्छता के संबंध में फीडबैक भी लिया गया। गोहद नगर पालिका के बाद अधीक्षण यंत्री मेहगांव पहुँचे जहाँ तैयारियों को देख कर बहुत ही नाराज हुये सीएमओ को तत्काल व्यवस्थाएं सुधारने के निर्देश दिये निरीक्षण के समय नोडल गोहद से आकाश त्यागी, आशीष शर्मा,एव मेहगांव से चन्दन, अन्य नगर पालिका कर्मचारी उपस्थित रहे।

गीतेश की नवीन कृति थमे नहीं चरण के द्वितीय संस्करण का हुआ लोकार्पण एवं सम्मान समारोह संपन्न।

महेंद्र शर्मा उप संपादक

पुष्पांजलि टुडे

ग्वालियर । मध्यप्रदेश शासन संस्कृति संचालनालय ,भोपाल के सहयोग से ÷कला समय संस्कृति शिक्षा और समाज सेवी समिति भोपाल÷ द्वारा आयोजित ग्वालियर के वरिष्ठ गीतकार मुरारी लाल गुप्त ÷गीतेश÷ की नवीन काव्यकृति ÷थमें नहीं चरण÷ के द्वितीय संस्करण का गत दिवस ÷लोकार्पण एवं सम्मान समारोह ÷का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता पंडित सज्जन लाल ब्रह्मभट्ट , रसरंग एवं संस्थापक सचिव भंवरलाल श्रीवास सहित देश के अनेक मूर्धन्य कवियों एवं गीतकारों की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

पुस्तक ÷थमें नहीं चरण ÷ के द्वितीय संस्करण के लोकार्पण एवं सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि प्रभु दयाल मिश्रा ,अध्यक्ष महर्षि अगस्त्य वैदिक संस्थानम् एवं प्रधान संपादक , मानस भारती और वैदिक साहित्य के लेखक रहे । पुस्तक लोकार्पण समारोह के अवसर पर वरिष्ठ गीतकार एवं ÷साहित्य परिक्रमा ÷त्रैमासिक पत्रिका अखिल भारतीय साहित्य परिषद के पूर्व संपादक मुरारी लाल गुप्त गीतेश का शॉल ,श्रीफल, पुष्पहार एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर देश के अनेक मूर्धन्य गीतकार, कवि ,इतिहासकार एवं अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहे।

कार्यक्रम राज्य संग्रहालय सभागार श्यामला हिल्स भोपाल में साहित्य श्रृंखला÷ संस्कृति पर्व- 6÷ के क्रम में साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम के भव्यतापूर्ण समारोह में संपन्न हुआ।

धारकुड़ी थाना प्रभारी की बड़ी कार्यवाही

पुस्पजली टुडे
राजेश तिवारी

सतना जिले के धारकुडी थाना अंतर्गत शुक वाह में अवैध शराब बिक रही थी थाना प्रभारी धारकुडी पुलिस टीम के साथ दबिश देकर आरोपी शीला यादव पति राजकुमार के घर से 30 पाव शराब जप्त की 99/23 धारा 34 आबकारी एक्ट के तहत कारवाही की गई

भाग्य से सौभाग्य साली बनाया महिलाओ को शिवराज भाजपा सरकार ने :सतीश शर्मा

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी

मैहर। विधानसभा क्षेत्र में आज भारतीय जनता पार्टी की संयुक्त मोर्चा की बैठक का आयोजन किया गया इस बैठक में मुख्य अतिथि के तौर पर भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष सतीश शर्मा की उपस्थिति में आयोजित की गई थी आजमैहर विधानसभा सभा में सर्वप्रथम कोर कमेटी की बैठक का आयोजन सर्किट हाउस में किया गया इस बैठक में भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता उपस्थित रहे एवं इसके बाद भारतीय जनता पार्टी संयुक्त मोर्चा की बैठक माता देवी मंदिर के पीछे आल्हा ऊदल मंदिर प्रांगण में आयोजित की गई एवं बैठक के उपरांत सामूहिक टिफिन भोज बैठक भी आयोजित की गई इस बैठक में संयुक्त रूप से भारतीय जनता पार्टी के सभी पदाधिकारी कार्यकर्ता गण टिफिन पार्टी में सम्मिलित हुए इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष सतीश शर्मा ने सभी कार्यकर्ताओं को ऊर्जा फूकते हुए संबोधित किया इस बैठक में स्वागत भाषण कमलेश सुहाने द्वारा किया गया एवं मंडल अध्यक्ष विकास तिवारी द्वारा सभी अतिथियों का परिचय कराया गया एवं इसके अतिरिक्त सभी पदाधिकारियों ने अपना परिचय स्वयं देकर सभी पार्टी कार्यकर्ताओं से रूबरू हुए इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष सतीश शर्मा ने कहा कि आज भारतीय जनता पार्टी की इतनी सारी योजनाएं हैं जो अंतिम पंक्ति पर बैठे अंत्योदय तक के लोगों को इसकी योजना धरातल पर मिल रही है लेकिन उसके बावजूद कांग्रेस के कुछ लोग चुनावी आते ही बरसाती मेंढक की तरह गांव गांव में टर्टर करने लगे हैं जिसको लेकर के हमें लोगों को जागरूकता का संदेश भारतीय जनता पार्टी की योजनाओं को उन तक पहुंचाना है आज भारतीय जनता पार्टी की इतनी बड़ी उपलब्धि है जो गांव-गांव तक हर महिलाओं को भाग्य से सौभाग्यशाली बनाने का काम किया है महिलाओं को ?1000 लाडली बहना योजना के माध्यम से लाभान्वित किया गया है जो सबसे बड़ी योजना भारतीय जनता पार्टी की कही जा रही है इसके अतिरिक्त बुजुर्ग माता-पिता को तीरथ कराने वाले शिवराज सिंह चौहान एक ऐसे मध्यप्रदेश के मुखिया हैं जिन्होंने हर वर्ग के लोगों के बुजुर्ग माता-पिता को तीरथ करा कर बड़ा पुण्य काम किया है और मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना मध्यप्रदेश की सबसे अच्छी योजना मानी जाती है इसी तरह मध्य प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार की अनेकों ने की योजना हर वर्ग के लोगों के लिए सरकार निरंतर चला रही हैं ये रहें उपस्थित ब्रिजेस चौरसिया श्रीकांत चतुर्वेदी कमलेश सुहाने विपिन चतुर्वेदी रामबाबू त्रिपाठी मोतीलाल तिवारी भास्कर चतुर्वेदी विवेक अग्रवाल सावन जायसवाल विकास त्रिपाठी महेश तिवारी कुलदीप तिवारी सविता अग्रवाल गीता सोनी संतोष सोनी रवि सर्राफ सुबोध मिश्रा सुजीत से रामानंद पटेल मनीष पाठकसमेत भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता समाजसेवी कार्यकर्ता गण उपस्थित रहेसंयुक्त मोर्चा की बैठक में सतीश शर्मा ने सभी मोर्चा के मंडल अध्यक्ष और महामंत्री को इस बैठक में आमंत्रित किया गया था जिसमें कई मोर्चों के मंडल अध्यक्ष और महामंत्री नदारद रहें जिसको लेकर के बिना सूचना के अनुपस्थित रहने वालों से जवाब तलब किया गया है एवं सतीश शर्मा ने सभी मंडल अध्यक्षों को संगठन को तेजी से विस्तार एवं सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने और पोलिंग केंद्रों तक सरकार की योजना का क्रियान्वयन करने के लिए कड़े निर्देश दिए गए हैं इसके अतिरिक्त सही मंडल अध्यक्षों से बूथ लेवल पर पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं से संवाद करने के लिए निर्देश दिए गए हैं।

सचिवालय प्रशासन विभाग के अधिकारी की हठधर्मिता के आगे मुख्यमंत्री का आदेश बेअसर सचिवालय में गत 5 सालों से अधिक समय से सेवा कर रहे 250 अधिकारियों के स्थाईकरण का मामला

लखनऊ उत्तर प्रदेश शासन में 2010 बैच के नियमित पदों पर लोक सेवा आयोग से चयनित सीधी भर्ती के लगभग ढाई सौ राजपत्रितअपर निजी सचिवों के मामले में एक ओर सीबीआई जांच से आच्छादित 2013 से 2016 बैच के समीक्षा अधिकारियों का नियमावली का हवाला देकर सचिवालय प्रशासन विभाग ने एक ओर उन्हें स्थाई करते हुए अनुभाग अधिकारी के पदों पर पदोन्नति दे दी परंतु वहीं दूसरी ओर सचिवालय में गत 5 सालों से अधिक समय से सेवा कर रहे इन 250 अधिकारियों को स्थाई नहीं किया गया। स्थाई ना किए जाने के कारण महिला अपर निजी सचिवों को चाइल्ड केयर लीव, लक्ष्म से निकासी व ऐसे ही अनेक सेवा सबंधी लाभों से वंचित रखा जा रहा है, इससे क्षुब्ध होकर इन अपर निजी सचिवों ने माननीय मुख्यमंत्री और मुख्य सचिव से सचिवालय प्रशासन के अधिकारियों द्वारा दोहरा मापदंड अपनाने और भेदभाव करने का खुलासा किया। मामले की जानकारी होने पर मुख्यमंत्री ने नाराजगी जाहिर करते हुए आख्या मांग ली। सचिवालय प्रशासन के अधिकारियों को जब अपनी गलती का एहसास हुआ तो मुख्यमंत्री के निर्देशों पर मुख्य सचिव की अध्यक्षता में जनवरी 2023 में न्याय विभाग, वित्त विभाग, कार्मिक विभाग, गृह विभाग और सचिवालय प्रशासन विभाग के अधिकारियों के साथ जनवरी 2023 में बैठक की।

नियमों पर विचार विमर्श करते हुए गंभीर मंथन के बाद न्याय विभाग के परामर्श पर निर्णय लिया गया कि सीबीआई जांच में होने वाले अंतिम निर्णय के अधीन इन अपर निजी सचिवों को स्थाई किए जाने में कोई भी विधिक बाधा नहीं है अगर सीबीआई जान में कोई अपर निजी सचिव दोषी पाया

जाएगा तो उसके विरुद्ध आपराधिक मामला दर्ज करते हुए विधिक कार्यवाही की जाएगी। नाम ना छापने की शर्त पर सचिवालय प्रशासन विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि मुख्य सचिव के कार्यवृत्त पर फरवरी 2023 में कार्रवाई के लिए जब फाइल मुख्यमंत्री कार्यालय भेजी गयी तो एक कद्दावर अधिकारी के कहने पर मामले को लिंगर ऑन रखा गया। जब अपर निजी सचिव को यह स्पष्ट हो गया कि मुख्यमंत्री और मुख्य सचिव के आदेशों की अवहेलना सचिवालय प्रशासन विभाग स्तर पर हो रही है तो मामला हाईकोर्ट पहुंचा।हाईकोर्ट में मामले की सुनवाई करते हुए जज ने कहा कि जब सीबीआई जांच से आच्छादित समीक्षा अधिकारियों को नियमों के तहत स्थाई करके पदोन्नत किया जा चुका है तो एक जैसे समान प्रकरण में अपर निजी सचिवों को स्थाई क्यों नहीं किया जा रहा है?कोर्ट ने मई 2023 में सचिवालय प्रशासन विभाग को 1 माह का समय दिया कि प्रकरण में अपना एफिडेविट दाखिल करें। सचिवालय प्रशासन विभाग ने मामले की गंभीरता को देखते हुए नियमों का हवाला देते हुए सीबीआई जांच में होने वाले निर्णय के अधीन इन ढाई सौ अपर निजी सचिवों को स्थाई करते हुए समस्त सेवा संबंधी लाभ दिए जाने के प्रस्ताव पर मुख्यमंत्री और माननीय मुख्यमंत्री का अनुमोदन प्राप्त किया। सचिवालय प्रशासन विभाग के अधिकारी ने आगे यह भी बताया कि सचिवालय प्रशासन विभाग के एक अधिकारी अपनी हठधर्मिता के चलते इन अपर निजी सचिव को ना ही स्थाई करना चाहते हैं और ना ही सेवा संबंधी लाभ देना चाहते हैं जबकि मुख्यमंत्री से जून 2023 में ही प्रस्ताव पर अनुमोदन प्राप्त कर लिया था। अब प्रश्न उठता है कि सूबे के मुख्यमंत्री का आदेश आखिरकार सचिवालय प्रशासन विभाग के अधिकारी क्यों नहीं मान रहे हैं ऐसा क्या है कि एक समान प्रकरण में सचिवालय प्रशासन विभाग इन अधिकारियों को सेवा संबंधी लाभों से वंचित रखना चाहते हैं।

संपादकीय

'इंडिया' की गुगली

मंगलवार के दिन भारतीय राजनीतिक परिदृश्य दिल्ली में एनडीए के 38 और बंगलुरू में विपक्ष के 26 दलों के सम्मेलनों से रोचक बन गया। कार्यक्रम के साथ मीडिया में भी खबरें समांतर चली। कहना कठिन है कि यह संयोग था या खबरों की दुनिया के लिये सुनियोजित प्रयास। बहरहाल, राजग ने संदेश दिया कि उसका ढांचा लोकतांत्रिक है और उसके बिछुड़े दल वापस लौट रहे हैं। बहरहाल, ये सम्मेलन दलों के संख्याबल का मुकाबला तो बन ही गया। एक बात तो तय है कि राजग से अलग हुए नीतीश कुमार के प्रयासों से पटना से शुरू हुआ विपक्षी एकता का अभियान अब सिरे चढ़ते नजर आ रहा है। कयास तो पहले ही लग रहे थे कि जब आम चुनाव में कुछ ही महीने बाकी हैं तो दो बार से बड़े बहुमत से मजबूत सरकार बना रहे राजग को चुनौती देने की विपक्षी कोशिश जरूर होगी। बहरहाल, पटना से बंगलुरू तक की यात्रा में विपक्षी एकजुटता में इतनी तरक्की तो हुई है कि गठबंधन को 'इंडिया' नाम मिल गया है। यानी विस्तार में इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इनक्लूसिव एलायंस नाम दिया है। जाहिर है विपक्षी थिंक टैंक ने एक गुगली राजग की तरफ उछाली है और 'इंडिया' शब्द का मनोवैज्ञानिक लाभ उठाने की कोशिश की है। हालांकि, विपक्षी एकता के सूत्रधार नीतीश कुमार गठबंधन के नाम में 'भारत' शब्द जोड़ने की वकालत कर रहे थे। इसी दिन दिल्ली में मोदी सरकार की दूसरी पारी में राजग की पहली बैठक का आयोजन और उसमें नये छोटे दलों का शामिल किया जाना बताता है कि विपक्षी एकजुटता को राजग हल्के में नहीं ले रहा है। एक बात तो तय है कि लोकसभा चुनाव तक राजग व साझा विपक्ष में मुकाबला दिलचस्प होने जा रहा है। जाहिरा तौर पर, बंगलुरू में विपक्षी दलों ने राजग पर आक्रमण के लिये उन मुद्दों को प्राथमिकता दी, जिन पर वे मोदी सरकार को घेरते रहे हैं। खासकर सांप्रदायिकता, महंगाई, लोकतंत्र की आधारभूत संस्थाओं की स्वायत्तता, बेरोजगारी और मणिपुर के मुद्दे पर राजग को घेरने की कोशिश हुई। जाहिर है लोकसभा चुनाव में ये मुद्दे विपक्ष के हथियार होने वाले हैं। बहुत संभव है कि आगामी मानसून सत्र में विपक्षी एकजुटता का असर संसद में भी नजर आए। हालांकि, राजग नेतृत्व दिखाने का प्रयास कर रहा है कि वे इन एकजुटता के प्रयासों को गंभीरता से नहीं लेते हैं। इतना ही नहीं भाजपा अपने मुख्य एजेंडे कश्मीर में अनुच्छेद 370 को हटाने, अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के लक्ष्य को हासिल करने के बाद मानसून सत्र में समान नागरिक संहिता पर विधेयक लाने को प्रतिबद्ध नजर आ रही है। वहीं दिल्ली में राजग सम्मेलन से पहले गठबंधन से छिटके रामविलास पासवान के राजनीतिक वारिस चिराग पासवान, जीतनराम मांझी, ओमप्रकाश राजभर को जिस तरह राजग में शामिल किया गया, उसका मकसद जनता को यही संदेश देना है कि राजग के साथी बिखरे नहीं हैं। वहीं पूर्वोत्तर आदि के तमाम छोटे दलों को एनडीए में शामिल करके संदेश देने का प्रयास हुआ है कि राजग के साथ दलों की संख्या विपक्ष से ज्यादा है। कहीं न कहीं विपक्षी एकजुटता को लेकर राजग गंभीर तो नजर आने लगा है, भले ही वह इस बात को सार्वजनिक तौर पर स्वीकार न करे। बहरहाल बंगलुरू सम्मेलन को लेकर विपक्षी दल इस बात को अपनी उपलब्धि मान सकते हैं कि सोनिया गांधी की उपस्थिति में पटना सम्मेलन में अनमनी सी लग रही आम आदमी पार्टी, तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ममता बनर्जी तथा सपा की सक्रियता बता रही है कि विपक्ष अपने अस्तित्व के लिये एकजुटता को अपरिहार्य मान रहा है। तभी तो कई राज्यों में आमने–सामने रहने वाले राजनीतिक दल इस सम्मेलन में एक टेबल पर नजर आए। बहरहाल, कुछ कमेटियों व नीतियों पर तो विपक्षी दलों में सहमति भी बनी है, मगर अभी न्यूनतम साझा कार्यक्रम जैसे कई मुद्दों का निर्धारण होना है। साथ ही राज्यों में सीटों का बंटवारा भी एक चुनौती होगी। अभी लोकसभा चुनाव से पहले बहुत कुछ घटेगा। लेकिन तय है कि 2024 का समर रोचक होने वाला है। जिसे स्वस्थ लोकतंत्र के लिये सकारात्मक ही कहा जाना चाहिए।

दिल्ली-कोलंबो अहम रिश्ते

आदित्य नारायण

भारत ने पड़ोसी प्रथम की नीति अपनाते हुए हर समय संबंधों को मजबूत बनाने का ही काम किया लेकिन कुछ ताकतों ने दोनों देशों के संबंधों में कड़वाहट घोलने का काम किया। भारत और श्रीलंका के मध्य मतभेदों का एक मुख्य कारण श्रीलंकाई तमिलों के अधिकारों का रहा।

भारत और श्रीलंका के संबंध सदियों पुराने हैं। श्रीलंका का 3 हजार वर्षों का लिखित इतिहास मौजूद है। हिन्दू प्राचीन कथाओं के अनुसार श्रीलंका को भगवान शिव ने बसाया था। श्रीलंका को भगवान शिव के पांच निवास स्थानों में से एक घर माना जाता है। शिव के पुत्र कार्तिकेय यानि मुरुगन यहां के सबसे लोकप्रिय हिन्दू देवताओं में से एक हैं। मुरुगन की पूजा यहां के न सिर्फ तमिल हिन्दू करते हैं बल्कि बोध, सिंहली और आदिवासी भी करते हैं। श्रीलंका के अलग–अलग स्थानों पर ऐसे कई मंदिर हैं जो हिन्दू और बोधों की साझा संस्कृति को दर्शाते हैं। रामायण दोनों देशों के बीच ऐसा संबंध स्थापित करती है जिसे कभी अलग नहीं किया जा सकता। श्रीलंका भारत का ही हिस्सा रहा है। अंग्रेजों के शासन ने फूट डालो और राज करो की नीति के तहत तमिल और सिंहलियों के बीच साम्प्रदायिक एकता को बिगाड़ा। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 4 फरवरी, 1948 को श्रीलंका को पूर्ण स्वतंत्रता मिली। जब श्रीलंका आजाद हुआ तो अंग्रेज सत्ता सिंहलियों के हाथ में देकर चले गए और तमिलों को हाशिये पर धकेल दिया। तब से लेकर दोनों देशों के संबंध में बहुत उतार–चढ़ाव आते रहे लेकिन भारत ने हमेशा हर संकट की घड़ी में श्रीलंका की छोटे भाई की तरह मदद की। दोनों देशों में मतभेद होने के बावजूद दिल्ली–कोलंबो रिश्ते अहम बने रहे। भारत ने पड़ोसी प्रथम की नीति अपनाते हुए हर समय संबंधों को मजबूत बनाने का ही काम किया लेकिन कुछ ताकतों ने दोनों देशों के संबंधों में कड़वाहट घोलने का काम किया। भारत और श्रीलंका के मध्य मतभेदों का एक मुख्य कारण श्रीलंकाई तमिलों के अधिकारों का रहा। श्रीलंका में लिट्टे के बनने की कहानी काफी हद तक वैसी ही है जैसे दुनिया के कई और देशों और भारत के कुछ हिस्सों में जमीन, संसाधन और बराबरी की मांग पर कई सशस्त्र विद्रोह हुए और अभी भी चल रहे हैं। यहां की लड़ाई मुख्य तौर पर सिंहली और श्रीलंकाई तमिलों के बीच रही है। सिंहली यहां की मूल प्रजाति है जो बौद्ध धर्म मानती है। तमिल हिंदू हैं और इनमें भी दो तरह के लोग हैं। एक तो वे जो सदियों से यहां रह रहे हैं और दूसरे, जिन्हें ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान 19वीं और 20वीं सदी में चाय, कॉफी और रबर के बागानों आदि में काम करने के लिए दक्षिण भारत से ले जाया गया था।लिट्टे ही भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या का दोषी था। लिट्टे अब नेस्तनाबूद हो चुका है। यद्यपि श्रीलंका को चीन ने अपने कर्जजाल में फंसा कर उसे तबाही के कगार पर ला दिया और उसके बंदरगाह को कब्जा लिया जिसके बाद श्रीलंका के राजनीतिज्ञों को होश आया। जब–जब श्रीलंका पर संकट आया भारत ने अपने पड़ोसी होने के कर्त्तव्य को निभाया। कोरोना महामारी के दौरान भारत ने श्रीलंका को कोरोना वैक्सीन और अन्य जरूरी दवाइयां भेजीं। भारत ने हमेशा ही श्रीलंका में खून–खराबा रोकने में भी कूटनीतिक तौर पर मदद की लेकिन 2022 का आर्थिक संकट श्रीलंका के लिए सबक सरीखा था। जब श्रीलंका दाने–दाने को मोहताज हो गया और वहां की जनता श्रीलंका संसद के बाहर खड़ी होकर हिसक रुख अपनाने लगी तो श्रीलंका के शासक देश में फैली अराजकता के बीच भागते नजर आए। तब उन्हें एहसास हुआ कि कर्ज ले–लेकर घी पीने का परिणाम क्या होता है। भारत ने तब अलग–अलग तरीकों से करीब 4 अरब डालर की मदद दी थी। भारत की ओर से दी गई वित्तीय सहायता अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की कुल प्रत्याशित विस्तारित निधि सुविधा से कहीं ज्यादा थी। मोदी सरकार ने बेहद ही मानवीय और संवेदनशील कदम उठाया। 2022 की शुरुआत में श्रीलंका में लोगों को बिजली कटौती और ईंधन जैसी बुनियादी चीजों की कमी का सामना करना पड़ा। महंगाई का स्तर चरम पर पहुंच गया था। मुद्रास्फीति की दर प्रति वर्ष 50 प्रतिशत तक बढ़ गई थी। वहां बसों, ट्रेनों और चिकित्सा वाहनों जैसी जरूरी सेवाओं के लिए ईंधन की कमी हो गई थी। श्रीलंका के पास और आयात करने के लिए विदेशी मुद्रा का पर्याप्त भंडार नहीं था। ईंधन की कमी के कारण पैट्रोल और डीजल की कीमतों में बेतहाशा वृद्धि हुई थी। अप्रैल 2022 आते–आते लोगों का गुस्सा राजधानी कोलंबो में विरोध–प्रदर्शन के जरिए निकलना शुरू हो गया और देखते ही देखते ये विरोध प्रदर्शन पूरे देश में फैल गया था। अप्रैल–मई 2022 में श्रीलंका अपने इतिहास में पहली बार विदेशी ऋण पर ब्याज भुगतान करने में विफल रहा था। भारत से मिली सहायता की वजह से श्रीलंका को 6 महीने तक जीवित रहने में मदद मिली। अगर भारत ने श्रीलंका को मदद नहीं दी होती तो उसे एक और रक्तपात का सामना करना पड़ता। आर्थिक संकट के दौरान चीन और किसी अन्य देश ने उसकी मदद नहीं की। इतना ही नहीं भारत श्रीलंका को दिए गए कर्ज के पुनर्गठन के लिए भी तैयार हो गया है। भारत श्रीलंका में पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देने पर भी सहमत गया है। अब श्रीलंका कुछ सम्भला है। उथल–पुथल के एक साल बाद श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रम सिंघे भारत आ रहे हैं। दोनों देशों के राजनयिक रिश्तों के 75 वर्ष भी पूरे हो रहे हैं। श्रीलंका ने हाल ही में भारत को अपना सच्चा साथी कहकर चीन को बता दिया है कि श्रीलंका के लिए भारत सबसे अहम है। श्रीलंका के राष्ट्रपति की यात्रा से दोनों देशों में कई मुद्दों पर द्विपक्षीय वार्ता होगी जिससे संबंधों को नई दिशा मिलेगी। वैसे भी श्रीलंका को चीन के मकड़जाल से मुक्त कराना भारत की बड़ी कूटनीतिक सफलता है।

संसद के सावन सत्र की चुनौती

आज से संसद का 'सावन' सत्र (मानसून सत्र) शुरू हो रहा है जो केवल 20 दिन का 17 बैठकों वाला होगा। हम पिछले कुछ वर्षों से देख रहे हैं कि किस प्रकार संसद के सत्र छोटे पर छोटे होते जा रहे हैं और साल में संसद बामुश्किल 55 या 56 दिन के लिए ही बैठती है और उसमें भी सार्थक चर्चा होने के स्थान पर सत्ता व विपक्षी खेमों के बीच एक–दूसरे के ऊपर आरोप–प्रत्यारोपों की बौछार होती रहती है और भारी शोर–शराबा मचता रहता है या बैठकें बार–बार स्थगित होती रहती हैं। भारत पूरी दुनिया में संसदीय प्रणाली का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है और इसके बावजूद इसकी संसद की हालत ऐसी हो गई है कि 17वीं लोकसभा का कार्यकाल पूरा होने में अब केवल मुश्किल से नौ महीने ही बचे हैं मगर इसे अभी तक अपना उपाध्यक्ष ही नहीं मिल पाया है। इसे हम यदि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह बहुत बड़ी विडम्बना है क्योंकि स्वतन्त्र भारत का संविधान लिखने वाले बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने ही बहुत स्पष्ट शब्दों में घोषणा की थी कि संसद पर पहला अधिकार विपक्ष का होता है क्योंकि वह अल्पमत में होता है मगर उसी जनता का प्रतिनिधित्व करता है जिसका प्रतिनिधित्व बहुमत का सत्ताधारी दल करता है। अतः विपक्ष द्वारा उठाये गये मुद्दों और विषयों पर विशद चर्चा कराना सत्ताधारी दल का नैतिक कर्त्तव्य बन जाता है। मगर हम तो देखते आ रहे हैं कि पिछले सत्र में जिस प्रकार एक के बाद एक विधेयक बिना चर्चा के ही संसद के दोनों सदनों के भीतर भारी शोर–शराबे के बीच पारित होते रहे यहां तक कि चालू वित्त वर्ष के बजट को भी बिना किसी चर्चा के ही ध्वनिमत से पारित कर दिया गया। हम भंयकर गलती कर रहे हैं क्योंकि हम उसी संसद को अप्रासंगिक बनाने का प्रयास कर रहे हैं जिसके साये में इस देश का पूरा निजाम चलता है और जिसमें बैठे हुए आम जनता के प्रतिनिधि आम लोगों से ताकत लेकर उसे चलाने की जिम्मेदारी उठाते हैं और इस मुल्क के हर तबके के लोगों का जीवन स्तर सुधारने के लिए नीतियां बनाते हैं। भारतीय संविधान के तहत संसद को सार्वभौम इस तरह माना गया है कि इसे नये कानून बनाने का भी अधिकार है, बशर्ते वे कानून संविधान की कसौटी पर खरे उतरते हैं जिनकी तसदीक करने का हक सर्वोच्च न्यायालय को दिया गया है। इसलिए संसद को सुचारू रूप से चलाने की जिम्मेदारी सत्ता पक्ष को ही दी गई और इसके लिए ऐसी सुगठित व्यवस्था की गई कि केन्द्र सरकार में एक पृथक संसदीय कार्य मन्त्रालय तक सृजित किया गया। मगर हमने पिछले सत्र में देखा कि खुद सत्तापक्ष के ही सांसदों ने संसद को नहीं चलने दिया और पूरा सत्र व्यर्थ ही चला गया। संसदीय कार्यमन्त्री का मुख्य कार्य विपक्ष के साथ संवाद कायम करके संसदीय कामकाज को सामान्य तरीके से चलाने का होता है। मगर इसके साथ ही दोनों सदनों के सभापतियों की भी यह जिम्मेदारी होती है कि वे संसद की कार्यवाही को चलाने के लिए संसदीय कार्यमन्त्रणा समितियों से लेकर विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं की सहृदयता प्राप्त करने का प्रयास करें। इसी वजह से हमारे संविधान निर्माताओं ने संसद को पूरी तरह स्वतन्त्र व स्वायत्तशासी संस्था का स्वरूप दिया और लोकसभा अध्यक्ष की स्वतन्त्र सत्ता इस प्रकार स्थापित की कि सरकार का किसी भी प्रकार का दखल इसके कामकाज में न रहे। लोकसभा अध्यक्ष के आसन को भारतीय लोकतन्त्र की सांस्कृतिक परंपरा में 'विक्रमादित्य का आसन' माना जाता है जिस पर बैठते ही व्यक्ति अपने–पराये का भेद भुला कर केवल न्याय का संरक्षक बन जाता है। हमने यह खुद देखा है कि जब इस आसन पर 'सभापति पैनल' में चयनित कोई विपक्ष का सांसद बैठता है तो वह किस प्रकार सबसे पहले उत्तेजित विपक्षी सांसदों को ही शान्त रहने की ताईद करने लगता है। यही तो हमारे लोकतन्त्र की खूबी है। जिसका लोहा पूरी दुनिया मानती आयी है। सावन या मानसून सत्र प्रायः छोटा ही होता आया है जो बजट के ग्रीष्मकालीन सत्र व सर्दियों के शीतकालीन सत्र को जोड़ने वाली कड़ी के रूप में देखा जाता है। अतः इसका उपयोग भी बहुत सावधानीपूर्वक करने की परंपरा रही है। संसद में हम अगर सार्थक बहस या रचनात्मक चर्चा को ही टालने का प्रयास करेंगे तो आम जनता में जनप्रतिनिधियों के बारे में जो सन्देश जायेगा वह संसद की गरिमा के हक में नहीं होगा क्योंकि हर पांच साल बाद तो हर पार्टी का प्रत्याशी जनता से बड़े–बड़े वादे करके ही वोट यह कह कर पाता है कि वह लोकसभा में पहुंच कर आम जनता का दुख–दर्द व उनकी समस्याओं के बारे में चर्चा करेगा और राष्ट्र की नीतियों के निर्माण में अपना योगदान देगा।संसद का हर सत्र शुरू होने से पहले सर्वदलीय बैठक बुलाने की रस्म भी पूरी कर दी जाती है और घोषणा कर दी जाती है कि इसे सुचारू रूप से चलाने के लिए सभी पार्टियां सहयोग करेंगी मगर इसके बैठते ही नतीजा 'ढाक के तीन पात' निकलता है। यदि संसद ने केवल बिना बहस कराये ही भारी शोर–शराबे के बीच ध्वनिमत से ही विधेयक पारित कराने हैं तो संसद की क्या प्रासंगिकता रहेगी। हमें ध्यान रखना चाहिए कि हमारे लोकतन्त्र में संसद के सत्र कोई समारोह नहीं हैं बल्कि हमारी प्रशासनिक व्यवस्था की अन्तरंग प्रणाली हैं क्योंकि संसद केवल वाद–विवाद का प्रतियोगिता स्थल नहीं होती बल्कि लोकहित व राष्ट्रहित में फैसला करने का सबसे ऊंचा मंच होती है।

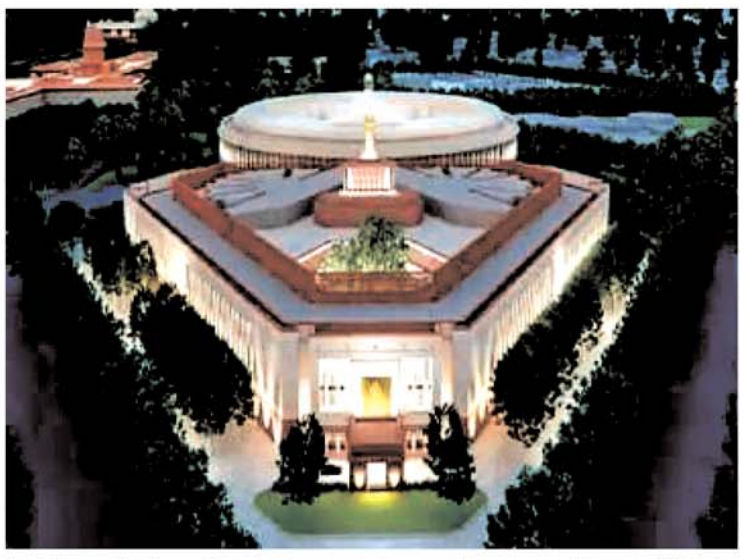

इंडिया से भारत की अपेक्षाएं

मंगलवार को कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु में 26 विपक्षी दलों ने इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इनक्लूजिव एलाएंस– इंडिया के नाम से गठबन्धन बनाकर जहां अगले लोकसभा चुनाव में इकठ्ठे उतरने की तैयारी कर ली है, वहीं दूसरी ओर उसी दिन सत्तारुढ़ भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में सहयोगी दलों की बढ़ी हुई संख्या (38) के साथ राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबन्धन (एनडीए) ने भी 2024 के महासमर के लिये कमर कस ली है। एनडीए का उद्देश्य डिफेंडर के रूप में अपनी केन्द्र की सरकार को बचाये रखना है, तो वहीं दूसरी तरफ चौलेंजर के रूप में उतरा नवनिर्मित गठजोड़ इंडिया उससे सत्ता छीनकर नयी सरकार बनाने का दृढ़ निश्चय कर चुका है। पिछले लगभग एक साल के दौरान पुनर्जीवित हुई कांग्रेस के नेतृत्व में संयुक्त प्रगतिशील मोर्चे (यूपीए) में शामिल कई नयी–पुरानी साथी पार्टियां क्षेत्रीय संकीर्णताओं व व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को परे रखकर लोकतंत्र के व्यापक हित में संयुक्त शक्ति बनने के उत्साह से लबरेज दिख रही हैं। इंडिया बनाम एनडीए में कौन किसे पटकनी देता है यह तो अगले साल के मध्य में होने वाला चुनाव ही बतलाएगा, लेकिन यही वह समय है जब इस बात को समझना होगा कि लोकतंत्र में भरोसा रखने वाली जनता और परिवर्तन का आतुरता से इंतजार कर रहा जनमानस इंडिया से कौन सी उम्मीदें लगाये बैठा है। पहले तो यह समझना होगा कि वे कौन से तत्व और कारक हैं जिनके कारण भारत के अधिसंख्य लोग प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में दो बार बनी सरकार से निराश हो गये हैं। पहला तो यह कि आर्थिक मोर्चे पर मोदी सरकार बेहद असफल रही है। विभिन्न गलत वित्तीय फैसलों ने भारत को गरीबी व बेरोजगारी के गहरे कुंए में ढकेल दिया है। विकास के विभिन्न पैमानों पर देश अंतरराष्ट्रीय सूची में लगातार फिसड्डी साबित हो रहा है। नोटबन्दी व जीएसटी के गलत फैसलों ने देश की आर्थिक तबाही का रास्ता पहले ही खोल दिया था, जिसके कारण कोरोना काल में हुई करोड़ों लोगों की और भी दुर्गति हुई। ऐसे में भी मोदी के कारोबारी मित्रों का सतत अमीर होते जाना भी लोगों ने देखा था। जैसी आर्थिक असमानता देश में अभी बनी हुई है वैसी पहले कभी भी नहीं देखी गई। यूपीए सरकार ने 2004 से लेकर 2014 तक देश के करोड़ों गरीबों का जैसा विकास किया था, वह सारा मोदी सरकार ने निष्फल कर दिया। शिक्षा व स्वास्थ्य के गिरे हुए स्तर के साथ भारत के 80 करोड़ से ज्यादा लोग आज सरकारी अनाज पर जीवित हैं। उत्तरदायित्वहीनता और अपारदर्शिता के साथ मोदी की पहचान आज एक निरंकुश राष्ट्राध्यक्ष के रूप में विश्व भर में होती है जो अपनी आलोचना को कतई बर्दाश्त नहीं करते।

सरकार की आलोचना करने वाले विरोधी दलों के नेता, पत्रकार, बुद्धिजीवी, सामाजिक संगठनों के लोग या तो कानूनी कार्रवाई झेल रहे हैं या फिर प्रताड़ित हो रहे हैं। लोकतंत्र के चारों स्तम्भों को मोदी राज में एक–एक कर कमजोर कर दिया गया है। केन्द्रीय जांच एजेंसियों का बेछूट इस्तेमाल विरोधी दलों के नेताओं के लिये किया जा रहा है या फिर विपक्ष की सरकारों को गिराने में होता है। भ्रष्टाचार व वंशवाद को मिटाने के नाम पर पहले तो मोदी, भाजपा व उसकी मातृ संस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ करता रहा। लोगों के ब्रेन वॉश करने से सरकार को अपनी कार्रवाई का औचित्य सिद्ध करने में मदद मिली। हालांकि अब जनता इस खेल को समझ गई कि राष्ट्रवाद व देशभक्ति के नाम पर ये संगठन केवल धन कमाने में लगे हैं– वह भी जनता की जेब से पैसे उगलवा कर। देश के वे लोग जो भारत को एक समावेशी समाज के रूप में देखते हैं, वे विशेष तौर पर निराश हैं क्योंकि देश का सामाजिक ताना–बाना पिछले 9 साल में पूरी तरह से तार–तार हो गया है। साम्प्रदायिकता, जातिवाद, अगड़े–पिछड़ों की लड़ाई, परस्पर नफरत, अल्पसंख्यकों के विरुद्ध हिंसा की खुले आम वकालत आदि के चलते देश में कानून–व्यवस्था का राज ढह गया है। सत्ता से जुड़े लोग कानून को ठेंगा दिखा रहे हैं और न्याय गरीबों, वंचितों, शोषितों की पहुंच से दूर है। एक ओर तो आम जनता के अपने दुख–दर्द बढ़े हैं वहीं भाजपा विरोधी राजनैतिक दल व सरकारें देश में संघीय ढांचे के ध्वस्त हो जाने से परेशान हैं। कांग्रेस मुक्त या विपक्ष मुक्त भारत, डबल इंजन सरकार आदि जैसी लोकतंत्र विरोधी अवधारणाओं को लोकप्रिय नारों में बदला गया। विरोधी दलों की सरकारों को गिराने के लिये ऑपरेशन लोटस जैसे कुत्सित अभियान चलाए गए। इन गैर–लोकतांत्रिक तरीकों से देश के सभी राज्यों में भाजपा की अपने एकाधिकार की बढ़ती मंशा ने विभिन्न विरोधी दलों को एक मंच पर खड़ा कर दिया है। ऐसे में उन्हें भी यह जानना होगा कि जनता भाजपा के खिलाफ इस गठबन्धन की एक स्थिर सरकार तो चाहती ही है, आने वाले समय में उसे 2014 के पहले वाला वही समावेशी व न्यायपूर्ण भारत चाहिये जो महात्मा गांधी की अहिंसा, नेहरू के विकासवाद तथा संविधान निर्माता बीआर अंबेडकर की समरसता व धर्मनिरपेक्षता में यकीन रखता हो। इंडिया को यही सुनिश्चित करना होगा।

झरगांव तेतलपारा के प्राथमिक शाला भवन हुआ जर्जर जान जोखिम में डाल कर बच्चे सुनहरे भविष्य गढ़ने को मजबूर

संवाददाता हेमचंद नागेश

गरियाबंद- एक तरफ राज्य व केन्द्र सरकार बेहतर शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराने की दम भरते नहीं थक रहे हैं। दुसरी ओर गरियाबंद जिले के आदिवासी विकासखण्ड मैनपुर के दुरस्थ वनांचल के ग्रामों में बदहाल शिक्षा व्यवस्था के चलते मासूम बच्चो को बेहतर शिक्षा नहीं मिल पा रहा है और बकायदा बच्चे शिक्षा हासिल करने स्कूल तक पहुंच रहे हैं लेकिन उन्हे बैठकर पढ़ाई करने के लिए स्कूल अच्छा भवन भी नसीब नहीं हो पा रहा है। यहां सब स्थिति क्षेत्र के झरगांव पंचायत के आश्रित पारा तेतलपारा में देखने को मिल रहा है और तो और शिक्षा विभाग के स्थानीय अधिकारियों को यह तक मालूम नही है कि बच्चे किस स्थिति में पढ़ाई कर रहे हैं। तहसील मुख्यालय मैनपुर से 60 किलोमीटर दुर ग्राम पंचायत झरगांव के आश्रित पारा है। इस पारा में सन् 1997 में प्राथमिक शाला शासन के द्वारा प्रारंभ किया गया है, और स्कूल भवन का भी निर्माण किया गया है। स्कूल भवन बेहद जर्जर हो गया है, स्कूल भवन के छत पुरी तरह से जीर्ण शीर्ण हो चुका है और बडे बडे प्लास्टर टुटकर गिर रहे हैं, जिसके चलते इस भवन स्कूल की कक्षाए संचालन करना किसी खतरे से कम नहीं है। बच्चों की जान की सुरक्षा को देखते हुए कक्षा पहली से लेकर पांचवीं तक की एक ही कक्षा संचालित किया जा रहा है। भले ही यह सुनकर आर्श्चय होगा लेकिन यह पुरी तरह सत्य है। एक ही कक्षा में छात्र छात्राएं अध्ययन कर रहे है और यदि पुरे बच्चे एक साथ स्कूल में पढाई करने पहुंचते हैं तो शिक्षकइतने छोटे कमरे के अंदर खडे भी नहीं हो पाते ऐसे में पांच कक्षा संचालित करवाना मजबूरी बन गई है। शासन द्वारा शाला नए सत्र चालु होने पूर्व सभी स्कूलओ में छत मरमत हेतु लाखों की स्वीकृति की गई लेकिन अब एक एक स्कूल में छत मरमत नहीं किया गया है।

श्रद्धा पब्लिक स्कूल में छात्र परिषद के नवनिर्वाचित सदस्यों का किया गया शपथ ग्रहण

संवाददाता हेमचंद नागेश

श्रद्धा पब्लिक स्कूल गरियाबंद द्वारा संस्था के प्राचार्य बलजीत कौर के मार्गदर्शन में छात्र परिषद के नवनिर्वाचित सदस्यों का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती के छाया चित्र पर दीप प्रज्वलित कर सरस्वती वंदना अभिभावकों एवं प्राचार्य द्वारा की गई । विद्यालय के प्राचार्य द्वारा छात्र संघ को विद्यालय के प्रति उनके कर्तव्यों वह जिम्मेदारियों से अवगत कराया गया तथा छात्र संघ को कर्तव्यों का पूर्ण रूप से निर्वहन करने हेतु शपथ दिलाया गया सत्र 2023-24 छात्र संघ के पदाधिकारियों हेड बॉय ऋषभ साहू हेड गर्ल खुशबू सिन्हा खेल सचिव तन्मय निषाद सांस्कृतिक सचिव धानी साहू गुरुकुल हाउस कैप्टन नियति मडामे वॉइस कैप्टन डोमेंद्र निषाद नालंदा हाउस कैप्टन रिद्धि सिन्हा वाइस कैप्टन देविका खरे तक्षशिला हाउस कैप्टन धान्या सोनी वाइस कैप्टन कनिष्का विप्रै विक्रमशिला हाउस कैप्टन तनुजा साहू वॉइस कैप्टन वैष्णवी यादव 7 इस कार्यक्रम में श्रद्धा पब्लिक स्कूल परिवार का पूर्ण रूप से सहयोग रहा है।

मोहदा के माध्यमिक शाला में राजीव गांधी युवा मितान क्लब के तहत छत्तीसगढ़िया ओलंपिक खेल का किया गया समापन

संवाददाता हेमचंद नागेश

आज ग्राम पंचायत मोहदा के माध्यमिक शाला मे छत्तीसगढ सरकार माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी की योजना के अनुसार राजीव गाधी युवा मितान क्लब के तहत छत्तीसगढीया ओलंपिक खेल के समापन समारोह एव पुरस्कार वितरण कार्यक्रम मे मुख्य अतिथी के रुप मे युवा कांग्रेस बिद्रानवागढ विधान सभा महासचिव यशवंत कुमार यादव शामिल हुए कार्यक्रम की अध्यक्षता सरपंच ग्राम पंचायत मोहदा महेंद्र नागेश विशिष्ट अतिथी पुर्व मंडी अध्यक्ष धवलपुर धनीराम मरकाम पंच + युवा कांग्रेस ग्राम अध्यक्ष मोहदा नुतन मरकाम पंच गैदू राम नेताम ग्राम के वरिष्ट माखन नेताम राजीव गाधी युवा मितान क्लब अध्यक्ष शिवचरण दीवान उपाध्यक्ष खिलावन ओटी सचिव हरिश्वर नागेश कोषाध्यक्ष यशवंत नेताम सदस्य प्रवीण दीवान चंदन नागेश टार्जन नेताम लव नागेश गज्जू विश्व कर्मा मुकेश यादव संजय दीवान धनेश नेताम एव बडी संख्या मे छोटे छोटे बच्चे लडका

लडकी महिला पुरुष बडी संख्या मे छत्तीसगढीया ओलंपिक मे भाग लेकर अपनी प्रतिभा को दिखाया है इनाम मेडल पाया महासचिव यशवंत कुमार यादव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा की हमारी भूपेश बघेल की सरकार कांग्रेस सरकार जो खेल विलुप्त हो रही थी उसको संजोने का काम कर रही है और गांव गांव मे राजीव युवा मितान क्लब के द्वारा पारंपरिक खेल जैसे खो कबड्डी फुगडी गिल्लीडुां जलेबी दौड लंबी कुद उची कूद रस्सी खिच फूगगा फोड जैसे अनेक खेल को संजोने का काम कर रही है और करवा रही है हमारी सरकार गांव गरिब किसान मजदूर की सरकार है जिन्होने हर वर्ग क्षेत्र मे कार्य कर रही है हमारी सरकार बनते ही दो लाख तक कर्ज माफ किया और 2500 मे धान खरीद रही है पूरे भारत मे केवल छत्तीसगढ एक ऐसा राज्य है जहा 2500 मे धान खरीद रही है हमारी सरकार गोबर खरीद रही है कई लोग गोबर बेचकर अपनी परिवार का पालन पोषण कर रहे है जिनके पास खेत नही है उनको भूमिहीन मजदूर योजना के अंतरगर्त पैसा मिल रही है और बडी संख्या मे ग्रामीण उपस्थित होकर समापन समारोह एव पुरस्कार वितरण कार्यक्रम को सफल बनाए

देवभोग स्वास्थ्य विभाग के सुपरवाइजर ने बेटे के जन्म दिन पर लगाए पौधे

संवाददाता हेमचंद नागेश

देवभोग। विगत 25 वर्षो से देवभोग ब्लॉक में स्वास्थ्य विभाग में तैनात सुपर वाइजर आर. सी. वर्मा ने आज अपने बेटे रायसिंह वर्मा के जन्मदिन पर अस्पताल प्रांगण में पौधा रोपण किया। बेटा मध्यप्रदेश पुलिस में सीटीजी कमांडो पद पर तैनात हैं। वर्मा इलाके में पर्यावरण प्रेमी के रूप में अपनी पहचान बना चुके हैं। विगत 25 वर्ष में 5 हजार पौधो का रोपण कर चुके हैं जिनमे आधे बड़े वृक्ष का रूप ले लिया है। वर्मा ने बीएमओ सुनील रेड्डी,सुपरवाइजर महेंद्र सोमवंशी,भूपेंद्र चंद्राकर,रामावतार चतुर्वेदी,नमिता यदु,कमलेश नागेश तथा अन्य स्टॉफ के साथ कटहल,अशोक के पौधे के अलावा फलदार पौधा लगाया गया।

मणिपुर में महिलाओं के साथ हुई घटना पर जिला शहर कांग्रेस ने राष्ट्रपति के नाम सौंपा ज्ञापन

न्यायिक जांच की मांग की, आरोपियों का किया पुतला दहन

पुष्पांजली टुडे

दमोह। जिला शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पंडित मनु मिश्रा के नेतृत्व में मणिपुर में महिलाओं के साथ हुई घटना के विरोध में महामहिम राष्ट्रपति महोदय को के नाम ज्ञापन सौंपा गया एवं घटना के आरोपियों का पुतला दहन किया गया। मनु मिश्रा ने कहा कि मणिपुर में विगत कई माह से लगातार हिंसक घटनाएं घटित हो रही हैं, जिस पर मणिपुर सरकार रोक लगाने में पूर्णतः विफल रही है। ऐसी घटना सामने आई है जिससे पूरा देश शर्मसार हुआ है। आदिवासी वर्ग की महिलाओं को निर्वस्त्र करने तथा गैंगरेप करने तथा उसके परिवार के सदस्यों की हत्या करने जैसी घटना ने संपूर्ण देश में महिला सुरक्षा को लेकर प्रश्न चिन्ह खड़ा कर दिया है। इस तरह की घटना मानव समाज पर कलंक है तथा इस घटना पर माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा स्वयं संज्ञान लिया गया है। जिससे प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। मणिपुर प्रदेश एवं केन्द्र में दोनो जगह

भा.ज.पा.. की सरकार है प्रधानमंत्री जी का नियंत्रण नहीं है। भविष्य में ऐसी घटना घटित न हो इस हेतु आवश्यक है कि दोषियों के विरूद्ध सख्त कार्यवाही हो तथा प्रदेश में जारी हिंसा बंद हो। संपूर्ण घटना की जांच हो। वीरेंद्र दवे ने कहा कि मणिपुर की घटना दिल झकझोर देने वाली है मणिपुर सरकार विगत माहों से चली आ रही हिंसा को रोकने में नाकाम रही है महामहिम राष्ट्रपति महोदय से आग्रह है कि मणिपुर में तुरंत राष्ट्रपति शासन लगाया जाए और महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करने वाले आरोपियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाए। पुतला दहन और ज्ञापन में जिला शहर अध्यक्ष पं मनु मिश्रा, वीरेंद्र दवे, सेवादल अध्यक्ष वीरेंद्र ठाकुर, कार्यवाहक अध्यक्ष संजय चौरसिया,किसान कांग्रेस अध्यक्ष नितिन मिश्रा, धर्मवीर राय, मनजीत यादव, कमला निषाद, बसंत कुशवाहा, पार्षद,पप्पू कसोटिया, राशू चौहान, मिक्की चंदेल, रफीक खान, अजय जाटव, धर्मेंद्र अहिरवाल, नीरज यादव, टेक सिंह ठाकुर, विजय मिश्रा, खिल्लू ठाकुर, गिरीश मिश्रा, परसोत्तम कुशवाहा, महेंद्र कुशवाहा, पप्पू कुशवाहा, समीम कुरैशी डॉ ताहिर अली, सरवर पठान, जावेद खान, आरिफ राइन, शानू जुनेजा, केके अग्रवाल, राजकुमार कच्छवाहा, बलराम ठाकुर, अमित नामदेव, डब्बू चौबे, हरमिंदर सिंह राजपाल, पवन गुप्ता, मानक अहिरवाल, संजय सेठ, मुकेश सेन, गोपाल रैकवार, सतीश त्रिपाठी, सोनू मिश्रा, नरेश विश्वकर्मा, मदन पांडे, सौरभ अयाची, जाहिर कुरेशी, राजेश चौबे, हुकुमचंद, अलीम खान, राजेंद्र दुबे, एक चिश्ती एवं समस्त कांग्रेस करता उपस्थित रहे।

पावन परसोत्तम मास में कृष्ण जन्मोत्सव मनाया

पुष्पांजली टुडे

दमोह। चौथे दिन कथा व्यास वैष्णवी गर्ग जी ने भगवान कृष्ण के जन्म एवं लीलाओं की कथा श्रवण करा कर श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। नंद घर आनंद भयो जय कन्हैया लाल की, जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया जन्मोत्सव के उपरांत कन्हैया का पूजन अर्चन किया गया मिठाई एवं लड्डुओं का वितरण किया गया कथा की शुरुआत बलि बामन प्रसंग से हुई। किशोरी जी ने प्रभु भक्ति की महिमा बताते हुए कहा भगवान भगवान विष्णु राजा बलि को वामन अवतार में छलने आते हैं बे राजा बलि से तीन पग भूमि मांग लेते हैं राजा बलि के गुरु उसका साक्षात्कार ईश्वर से कराते हुए उन्हें संकल्प लेने से रोकते हैं ।राजा बलि के आग्रह पर जब भगवान विष्णु बामन अवतार से अपने विराट स्वरूप में आकर दो ही पैर से संपूर्ण ब्रह्मांड को नाप लेते हैं राजा की परीक्षा लेते हुए पूछते हैं कि तीसरा पैर कहां रखूं अन्यथा नरक भेज दूं राजा बलि ने अपने संकल्प की रक्षा करते हुए प्रभु भक्ति के प्रभु भक्ति में भगवान से अपना तीसरा पैर उन पर रखें उन्हें भक्तों रूप में स्वीकार करने को कहा राजा बलि के भक्त प्रेम के आगे भगवान हार गए और राजा बलि के महल का द्वारपाल वन उन्हें स्वीकारा बली बामन प्रसंग की संगीतमय प्रस्तुति से श्रद्धालु भावविभोर हो गए भए ।।प्रगट कृपाला दीन दयाला आराध्य प्रभु श्री राम के जन्म उत्सव के साथ कथा के दूसरे पड़ाव का शुभारंभ हुआ भगवान श्री राम के जन्म उत्सव और उनके जीवन चरित्र का कहते हुए कथावाचक किशोरी वैश्णवी गर्ग जी ने कहा कि भगवान राम का जीवन चरित्र में सिखाता है कि मित्रों के साथ मित्र जैसा माता-पिता के साथ पुत्र जैसा सीता के साथ पति जैसा भाइयों के साथ भाई जैसा स्वामी सेवकों के साथ स्वामी जैसा गुरु के साथ सेवक जैसा व्यवहार कैसे किया जाता है जो भगवान राम के चरित्र जीवन चरित्र को अपने जीवन में चरितार्थ करेगा उसके सभी कष्ट दूर हो जाएंगे रामराज में मनुष्य अतिरिक्त जीव जंतु में परस्पर प्रेम और सद्भाव से रहते थे इस द्वारा राम जानकी विवाह का प्रसंग भी सुनाया गया। ठाकुर से जोड़ा अपनी प्रीति परमात्मा ही परम सत्य है। जब हमारी वृत्ति परमात्मा में लगेगी तो संसार गायब हो जाएगा। प्रश्न यह है कि परमात्मा संसार में घुले-मिले हैं तो संसार का नाश होने पर भी परमात्मा का नाश क्यों नहीं होता। मुख्य यजमान भागवती हरिराम शर्मा एवम श्रीमति कलावती बालकृष्ण शर्मा ,श्रीमति सविता धर्मेंद्र शर्मा ,श्रीमति नंदनी वीरेंद्र शर्मा ,श्रीमती राखी प्रमोद शर्मा ,स्नेहा ,पीयूष , नमन , आदित्य, वैदिक ,शर्मा परिवार ने सभी धर्म प्रेमी जन से कथा श्रवण की अपील की है।

सेल्समैनो का आतंक,नही दिया कई महीनो से राशन,शिकायत पर देते हैं धमकी,सरपंच और ग्रामीणों ने मिलकर बनाया पंचनामा

संभागीय ब्यूरो गौरीशंकर कुशवाहा की पुष्पांजली टुडे की खबर

मामला निष्क्रिय खाद्य विभाग का है जहां अंधेर नगरी चौपट राजा वाली कहावत चरितार्थ होती दिख रही है,बीते कई दिनों से फुलवारी की जनता शिकायत के माध्यम से जिले के आला अधिकारीयों को अपनी व्यथा बता रही है की सहकारी उचित मूल्य की दुकान में पदस्थ सेल्समैन धर्मेंद्र द्विवेदी द्वारा न तो महीनो से खाद्यान वितरण किया जा रहा है न ही नियमित दुकान खोली जा रही है वही जिस स्थान के लिए दुकान आवंटित है उसके इतर फुलदरी में दुकान स्थांतरित करके गरीबों को भटकाया जा रहा है,जबकि दुकान फुलवारी में दुकान स्थापित की जानी है और तो और गुंडागर्दी का आलम ये है की यदि सेल्समैन की शिकायत की जाती है तो उसके द्वारा गरीबों को खुलेआम धमकी दी जाती है ।सभी प्रयास कर जब गरीब जनता को राहत नहीं मिली तो अभी बीते दिनों गूंगे बहरे जिला प्रशासन को हकीकत दिखाने के लिए खुद ग्रामीणों ने बंद दुकान का वीडियो सोशल मीडिया में वायरल किया था जिससे जिला प्रशासन के खाद्य विभाग के आला अधिकारियो की खूब थू थू हुई पर भ्रष्टाचार की चासनी में डूबे जिले के अधिकारीयों की चमड़ी इतनी मोटी हो चुकी है की इन्हे कोई फर्क नही पड़ता,

यही नहीं गुंडागर्दी के लिए मशहूर सेल्समैन पर कार्यवाही नही होने के कारण विगत दिनों फुलवारी पंचायत के सरपंच के माध्यम से एक पंचनामा ग्रामीणों द्वारा बनवा कर वायरल किया जा रहा है जिसमे साफ जिक्र है की उक्त सेल्समैन द्वारा 6 महीने तक का राशन नही दिया गया है।कोरोना काल जहां लोगो के लिए आपदा थी वही सेल्समैनों ने इसमें भी अवसर तलाश लिए जिस कोरोना का रोना रोकर स्टॉक की कमी की बात बता कर सेल्समैन गरीबों का हक डकार

रहे है वो कोरोना काल 2 वर्ष पहले गुजर गया,पर इन सेल्समैन का स्टॉक नही सुधर पायावैसे सुंदरा,फुलवारी,और भिलसाय में पदस्थ समित प्रबंधक राम सरोमणी द्विवेदी पुत्र विवेक दिवेदि सेल्समैन सगा भतीजा धर्मेंद्र द्विवेदी एक ही परिवार के सभी सदस्य है जो सालों से गरीबों का राशन डकार रहे है और विरोध करने वाले ग्रामीणों को धमकाने से बाज नहीं आते,यदि कोई इक्का दुक्का गरीब शिकायत जिले के अधिकारियों तक पहुंचा भी देता है तो अपनी राजनैतिक और आर्थिक पकड़ के चलते ये रिश्तेदारों की तिकड़ी साम दाम दण्ड भेद की प्रक्रिया अपना कर अधिकारियो का मुंह बंद कर देते है।

(इस तिकड़ी का इतिहास)

1.सुंदरा में पदस्थ सेल्समैन शैलू द्विवेदी जो की भीलशाय के समिति प्रबंधक रामशिरोमणि के पुत्र हैं,पर पहले कई बार ग्रामीणों ने खाद्यान्न वितरण करने और दुकान न खोलने के गंभीर आरोप लगाए थे,वही सूत्रों की माने तो लोडिंग आटो से जनता का अनाज दुकान में भी बेचे जाने की बात सार्वजनिक हुई थी।वही इनपर लाखो रुपए के गबन के बाद रिकवरी निकाली गई है पर राशि आज तक वसूली नही गई।

2.भिलसाय में पदस्थ समिति प्रबंधक रामशिरोमणि द्विवेदी तो इस तिकड़ी के सरदार है जिनपर लगभग 75 लाख के गबन के बाद रिकवरी निकाली जा चुकी है यहां तक कि इन्हें पद से पृथक करने जैसे आदेश भी जारी किए जा चुके है पर आज तक न तो रिकवरी हो सकी न ही इन्हे पद से पृथक की कार्यवाही हुई है,प्रथक करना तो दूर इन्हे आज तक भिलसाय समिति से तक नही हटाया गया ताकि पद पर रह कर जांच और दस्तावेज प्रभावित कर सकें।

3 .फुलवारी में पदस्थ सेल्समैन धर्मेंद्र द्विवेदी जो की भिलशाए समिति प्रबंधक रामशिरोमणि के भतीजे है ,पर लगातार शिकायतों का दौर जारी है पर कोई कार्यवाही नहीं हुई है इन तीनों पर जिले के बैठे आला अधिकारी में इन सभी पर मेहरबान है

जबेरा विधायक धर्मेंद्र सिंह लोधी विकास पर्व पर कर रहे करोड़ों के भूमि पूजन लोकार्पण

पुष्पांजली टुडे

दमोह। जबेरा विधानसभा से विधायक धर्मेंद्र सिंह लोधी निरंतर लोगों के बीच पहुंच कर उन्होंने एक अलग ही पहचान बनाई है एंव जबेरा विधानसभा से लोकप्रियता हासिल की है जबेरा विधायक विकास पर्व निरंतर हर ग्राम पहुंच रहे हैं इसी क्रम में विधायक विकास पर्व के अवसर पर ग्राम पिपरिया नवल,छपरवाहा,मुवार, पटना मानगढ़, रोड़,रीछई,सगरा पहुंचे जहां विभिन्न कार्यों के भूमि पूजन एवं लोकार्पण किए जिसमें ग्राम पंचायत पटना मानगढ़ में 52.86लाख ग्राम पंचायत मनगुवां मानगढ़ में 29.65 लाख ग्राम पंचायत झरौली 65.14 लाख कुल मिलाकर कुल राशि 147.65 लाख के लोकार्पण एवं भूमि पूजन किए।इस दौरान पटना मानगढ़ में सभा को संबोधित करते

हुए विधायक ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी निरंतर विकास के कार्य कर रही है। कांग्रेस के शासनकाल में कभी किसी परिवार में मुफ्त खाद्यान्न वितरण का कार्यक्रम नहीं किया गया एवं भारतीय जनता पार्टी की सरकार में खाद्यान्न वितरण से लेकर 5लाख तक का मुफ्त इलाज किया जा रहा है।ऐसी अनेकों योजनाएं हैं जिससे हर गरीब परिवार के लोग लाभान्वित हो रहे हैं ।भारतीय जनता पार्टी की सरकार गरीब जनता तो की ही है साथ में हिंदू धर्म को बचाने का भी काम किया है वर्षों से चले आ रहे अयोध्या में राम मंदिर बनवाने जैसा कार्य भारतीय जनता पार्टी की सरकार में संपन्न हुआ है।कश्मीर में धारा 370 हटाने का कार्य भारतीय जनता पार्टी की सरकार में हुआ है निरंतर भारतीय जनता पार्टी की सरकार गरीब रथ से लेकर राष्ट्र,धर्म के हित में निरंतर कार्य कर रही है।इस दौरान जबेरा विधायक ने पटना मानगढ़ में बन रहे उप स्वास्थ्य केंद्र का औपचारिक निरीक्षण किया एवं अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

मिशन अस्पताल में हो गया बिना ऑपरेशन के जबड़े का इलाज,एक्सीडेंट में महिला का जबड़ा अपनी जगह से हट गया था

पुष्पांजली टुडे

दमोह। शहर के मिशन अस्पताल में बड़ा आश्चर्यचकित कारनामा हुआ जिसने भी सुना हैरत में पड़ गया। जटिल समस्या जिसका इलाज़ सिर्फ एक बड़े ऑपरेशन से ही संभव था लेकिन आधारशिला संस्थान के द्वारा संचालित मिशन अस्पताल के डॉक्टर ने बिना ऑपरेशन के ही उसे ठीक कर दिखाया जो दमोह के इतिहास में शायद पहला केस साबित हुआ एक दंपत्ति सफर करते वड्त मोटरसाइकिल से सिलिप हुए दोनों गिर गए जिससे महिला के मुँह में गंभीर चोट आई महिला का जबड़ा अपनी जगह से हट गया। जिसे कई डॉक्टरों ने देखा सभी ने ऑपरेशन से ठीक होना बताया था ।लेकिन समाज सेवा में हमेशा संलग्न रहने वाले समाज सेवी डॉ अजय लाल और श्रीमती डॉ इन्दु लाल द्वारा इलाड़ की उच्चकोटि की सुविधाएं बड़े शहरों की तर्ड पर दमोह के मिशन अस्पताल में उपलब्ध कराई गई हैं । जिंसमें स्पेशलिस्ट डॉक्टरों की टीम भी उपलब्ध है । मिशन अस्पताल के ही डॉ वरिष्ठ दंत चिकित्सक डॉ अंशु एलेक्स गुन्नी ने सफलतापूर्वक बिना ऑपरेशन किये महिला को एक बड़ी मुसीबत से निकाल दिया। दरअसल दमोह जिले के काँटी गांव निवासी आकाश प्रजापति मोटरसाइकिल से पत्नी को लेकर मायके जाते वड्त रास्ते में स्पीड ब्रेकर से दोनों अनबैलेंस हुए और दुर्घटना का शिकार हो गए इस घटना में बाइक पर बैठी महिला को मुंह और जबड़े में गंभीर चोटें पहुंची इलाज के लिए कई डॉक्टरों को दिखाया । लेकिन सभी डॉक्टरों ने उसके जबड़े की हालत देखकर किसी अन्य शहर ले जाकर बड़े हॉस्पिटल में ऑपरेशन की सलाह दी। मेहनत मजदूरी करने वाला आकाश

प्रजापति पत्नी की पीड़ा को लेकर काफी परेशान था । पत्नी को यहां वहां कई डॉक्टरों को चेकअप कराया सभी ने एक ही सलाह दी ऑपरेशन कराने की। इसके बाद वह दमोह के मिशन अस्पताल पहुंचा डॉक्टर ने देखा एक्सरा करा कर जब चेकअप किया तो उन्होंने महिला के जबड़े की स्तिथि देखकर ऑपरेशन करना जरूरी नहीं समझा और बिना ऑपरेशन के ही जो जबड़ा अपनी जगह से खिसक गया था उसे उसी स्थान पर बैठा दिया।जिस दिन से महिला मोटरसाइकिल से गिरकर चोटिल हुई थी तभी से महिला के मुंह में सूजन कानों से खून बह रहा था बोलते और खाने में भी परेशानी हो रही थी। मिशन अस्पताल में इलाज सफलतापूर्वक हो गया और ना ऑपरेशन का खर्चा आया और ना ज्यादा परेशानी झेलनी पड़ी इलाज होने के बाद महिला और उसका पति अब काफी खुश है, डॉक्टर और मिशन अस्पताल को धन्यवाद दे रहे हैं । वहीं बिना ऑपरेशन किये इलाड़ करने वाले डॉ भी मानते हैं कि मिशन अस्पताल के डायरेक्टर द्वारा हमारे यहाँ बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। चिकित्सा संबंधित नए उपकरण हो या फिर महा नगरों की तर्ड पर उच्चकोटि की कैथलैब या सीटी स्कैन मशीन, ऑपरेशन ओ टी की सुविधाएं हो यह सब इस छोटे से शहर में बड़ी मायने रखतीं हैं। संचालक का यह भी कहना है कि यहाँ मिशन अस्पताल में आने वाले शहर व जिले के लोगों को बेहतर और कम ड़र्च में इलाड़ की बेहतर सुविधाएं प्रदान करना है।

लीनेस मैत्री क्लब दमोह का शपथ ग्रहण समारोह गुरु कृपा होटल में संपन्न

रीतेश अवस्थी
पुष्पांजली टुडे

दमोह। लीनेस मैत्री क्लब दमोह का शपथ ग्रहण समारोह गुरु कृपा होटल में शनिवार को आयोजित हुआ। आयोजन में मुख्य अतिथि डॉ सुधा मलैया, विशिष्ट अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष रंजीता गौरव पटेल रही। शपथ अधिकारी मल्टीपल प्रेसिडेंट अंजू कटारे विशेष अतिथि के रूप में दीपा मौजूद रही। कार्यक्रम के शुरुआत में बरखा गुप्ता द्वारा गणेश वंदना की गई । सपना राजपूत ने ध्वज वंदना और विश्व शांति के लिए 1 मिनिट का मौन करवाया। लीनेस प्रार्थना अंजना सोनी के द्वारा की गई। शपथ अधिकारी मल्टीपल प्रेसिडेंट ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि पीड़ित मानव सेवा के लिए लीनेस क्लब से अच्छा कोई मंच नहीं। इतने वृहद स्तर पर महिला संगठन की बहुत प्रशंसा करते हुए मुख्य अतिथि डॉ सुधा मलैया ने कहा यदि समाज सेवा स्टेटस सिंबल बन जाए तो उससे बड़ी बात कोई नहीं हो सकती उन्होंने कहा कि सभी को मन से सामाजिक गतिविधियों में से जुड़ना चाहिए एवं समाज के लिए सदैव कार्य करते रहना चाहिए। विशिष्ट अतिथि रंजीता पटैल ने कहा मैं आप लोगों के साथ हूं कभी भी मेरी आवश्यकता पड़े तो निसंकोच हमारे पास आ जाइएगा नवनिर्वाचित अध्यक्ष रोजी बग्गा ने अपनी प्राथमिकता बताते हुए समाज के प्रति समर्पण व सेवा भावना का संकल्प लिया । और उन्होंने बताया कि कोई भी कार्य सेवा भाव और मस्तिष्क के सम्मिश्रण से किया जाए तो जनकल्याण लक्ष्य तेजी से पाया जा सकता है। नए वर्ष अध्यक्ष रोजी बग्गा ,सचिव रजनी खरे, कोषाध्यक्ष ज्योति सचदेव एवं अन्य सदस्यों ने विभिन्न पदों के लिए शपथ ली। शपथ ग्रहण समारोह का कुशल संचालन स्मृति खरे एवं रिम्मी जुनेजा ने किया। सचिव रजनी खरे ने सबका आभार व्यक्त किया।

प्रधानमंत्री आवास योजना की द्वितीय और अंतिम किस्त के लिए परेशान होते हितग्राही

योगेश शर्मा
पुष्पांजली टुडे
चाचौड़ा जिला गुना मध्यप्रदेश

नगर परिषद चाचौड़ा बीनागंज में प्रधानमंत्री आवास योजना में डीपीआर का वास्ता देकर हितग्राहियों को परेशान किया जाता है जब तक सक्रिय दलाल से कर्मचारियों को अवैध राशि नहीं पहुंचती तब तक हितग्राही के खाते में पैसा नहीं डाला जाता अवैध राशि मिलते ही हितग्राही के खाते में राशि पहुंच जाती है ऐसा ही एक मामला वार्ड क्रमांक 2 के हितग्राही सुंदरलाल पिता मूलचंद अहिरवार शिव प्रतिवर्ष 2018-19 आईडी क्रमांक 2380 240 540 1860 0142 की अंतिम किस्त की राशि नगर परिषद चाचौड़ा बीनागंज को शासन से प्राप्त हो चुकी है लेकिन हितग्राही के खाते में नहीं डाली गई है क्योंकि हितग्राही के द्वारा कर्मचारियों को अवैध राशि नहीं दी गई है कर्मचारी नगर परिषद के चक्कर लगा लगा कर परेशान है पति बीमार है महिला परेशान महिला नगर परिषद के चक्कर लगा रही हैं लेकिन उन्हें कोई संतोषप्रद जवाब नहीं दिया जाता प्रधानमंत्री आवास योजना में चाचौड़ा बीनागंज नगर परिषद के द्वारा भारी घोटाले किए जा रहे हैं कई पीड़ितों ने इसकी शिकायत भी की लेकिन अधिकारी मौन बैठे हुए प्रधानमंत्री जी की महत्वकांक्षी योजना का नगर परिषद के कर्मचारियों के द्वारा भरपूर लाभ लिया गया जो कि नियम के विरुद्ध था लेकिन आज दिनांक तक इनके विरुद्ध प्रशासन के द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जा रही दिन प्रतिदिन नगर परिषद के कर्मचारियों एवं अधिकारियों के हौसले बुलंद होते जा रहे हैं आम नागरिक परेशान है

गुना मध्य प्रदेश चाचौड़ा नगर वासी लाइट की आंख में चोली से परेशान

चाचौड़ा से संवाददाता योगेश शर्मा

लाइट के जाने के कारण चाचौड़ा नगरवासी परेशानी झेल रहे हैं उमस के का 1रण वैसे ही नगरवासी परेशान है ऊपर से विद्युत मंडल के कर्मचारियों की लापरवाही के चलते दिन में कई बार लाइट जाने से गर्मी खेलना पड़ रही है उमस के कारण गलियों में सांप को जहरीले कीड़े मकोड़े निकल रहे हैं ऐसे में लाइट के ना रहने से नागरिकों को भारी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है एक ही पोल्की बार बार केवल जल जाने विद्युत मंडल के कर्मचारियों की लापरवाही और उपयोग की गई घटिया सामग्री की ओर इशारा करता हैलाइट जाने पर अगर नागरिक विद्युत मंडल में कॉल करते हैं तो कोई भी कर्मचारी कॉल अटेंड नहीं करता 2 दिनों से नगरवासी विद्युत विभाग की लापरवाही से परेशानी झेलने को मजबूर है ताज्जुब तो इस बात का है कि जिस जिले का के प्रभारी मंत्री ऊर्जा मंत्री हैं उन्हीं की तहसील का यह हाल है आखिर नागरिक जाएं तो कहां जाएं दीया तले ही अंधेरा है

संसद के मानसून सत्र में गुना सांसद डॉक्टर के पी यादव ने विभिन्न विषयों पर पूछे प्रश्न

सांसद यादव ने प्रस्तुत किए 3 प्राइवेट मेंबर बिल

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- लोकसभा का मानसून सत्र 20 जुलाई से प्रारंभ हो गया है। गुना सांसद डॉ.के.पी.यादव द्वारा 21 जुलाई को संसद के लोकसभा में तारांकित-अतारांकित प्रश्न पूछे गए, जिनमें से आयुष मंत्रालय, सूक्ष्म-लघु और मध्यम-उद्यम मंत्रालय, विधि व न्याय मंत्रालय से संबंधित प्रश्न पूछे गए।सांसद डॉ.के.पी.यादव ने आयुष मंत्रालय से आयुर्ज्ञान योजना के अंतर्गत सीएमई योजना के क्रियान्वयन से सम्बन्धित व अन्य मुद्दों पर प्रश्न पूछा, सूक्ष्म-लघु और मध्यम, उद्यम मंत्रालय से औद्योगिक पार्क हेतु प्रोत्साहन के लिए अतारांकित प्रश्न पूछा तथा कानूनी शिक्षा में हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग को बढ़ावा देने हेतु विधि और न्याय विभाग से प्रश्न किया। विधि और न्याय केंद्रीय राज्यमंत्री(स्वतंत्र प्रभार) अर्जुन राम मेघवाल द्वारा जानकारी देते हुए बताया गया कि कानूनी शिक्षा को हिंदी में सुगम बनाने हेतु 65 हजार शब्दों की शब्दावली संकलित की गई है। इसके अलावा सांसद डॉ. के.पी.यादव द्वारा कंपनी संशोधन विधेयक 2022, सामाजिक सुरक्षा संहिता संशोधन विधेयक 2022, संविधान संशोधन विधेयक 2022 जैसे तीन महत्वपूर्ण प्राइवेट मेंबर बिल भी प्रस्तुत किए गए। सांसद डॉ.के.पी.यादव ने क्षेत्र की जनता जनार्दन से अपील करते हुए कहा है कि मानसून सत्र में अपने क्षेत्र की समस्याओं व लोकहित के मुद्दों से संबंधित यदि आपके कोई सुझाव हो तो मुझ तक अवश्य पहुंचाएं।

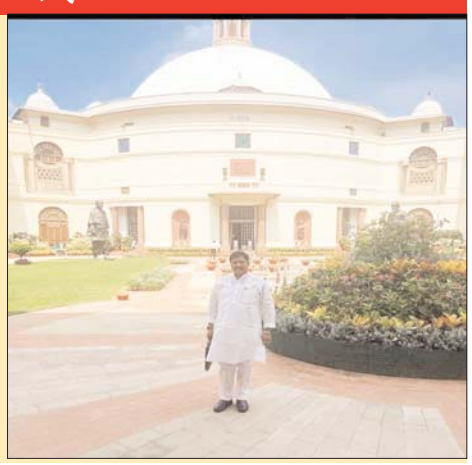

माटी शिल्पियों के पहचान पत्र एवं प्रशिक्षण हेतु 24 जुलाई तक आवेदन आमंत्रित

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम अन्तर्गत जिले में कुम्हारी कार्य में संलग्न 18 वर्ष से 45 वर्ष तक के माटी शिल्पियों एवं कारीगरों को जिला स्तर पर प्रशिक्षण कराये जाने हेतु आवेदन सहपत्रों सहित माटीकला अधिकारी जिला हाथकरघा कार्यालय जिला पंचायत पोहरी रोड शिवपुरी में 24 जुलाई तक आमंत्रित है। अधिक जानकारी हेतु कार्यालयीन समय पर सम्पर्क कर जानकारी प्राप्त करें।माटीकला अधिकारी ने बताया कि जिले अंतर्गत मिट्टी के वर्तन, मूर्तियां एवं खिलौने बनाने के कार्य में संलग्न माटी शिल्पियों के हितग्राहियों को म.प्र.माटीकला बोर्ड भोपाल व्दारा पंजीयन कर पहचान पत्र जारी करने की प्रक्रिया संचालित है।इच्छुक मिट्टी के वर्तन, मूर्तियां एवं खिलौने बनाने वाले माटी शिल्पी आवेदन सहपत्रों सहित दो पासपोर्ट फोटो, आधार कार्ड, परिवार समग्र आई.डी., बैंक की पासबुक, शैक्षणिक योग्यता, जाति प्रमाण पत्र के साथ आवेदन प्रस्तुत कर सकते है।

शिक्षकों का निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर संमपन्न

बी.पी., शुगर व थॉयराइड की नि:शुल्क जॉच कर डॉ. दीपक गौतम ने शिक्षकों को किया स्वास्थ्य के प्रति जागरूक

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के अंतर्गत चल रहे पाँच दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों के निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन सीडब्यूएसएन छात्रावास फतेहपुर में आयोजित हुआ। यह शिविर प्रांतीय शिक्षक संघ के आग्रह पर जिला परियोजना समन्वयक अशोक कुमार त्रिपाठी के विशेष सहयोग एवं कर्मचारी हितैषी कार्यो को लेकर स्वास्थ्य एवं सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत सुखदेव हॉस्पिटल, डायविटिज एवं थायरॉयड सेंटर द्वारा निःशुल्क आयोजित किया गया। डॉ. दीपक गौतम, एम.बी.बी.एस, डी.डी.एम., एफ.आई.डी.एम., थॉयराइड एवं शुगर स्पेशलिस्ट द्वारा शिक्षकों का स्वास्थ्य परीक्षण कर बी.पी., शुगर, एवं थॉयराइड की निशुल्क जॉच कर उचित सलाह देते हुये शिक्षकों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया। क्ष राज कुमार सरैया एवं जिला संयोजक विपिन पचौरी द्वारा आगे की जानकारी में बताया कि गत दिवस शिक्षकों का कार्यो को लेकर आयोजित हुआ। शिविर का शुभारंभ मॉ सरस्वती की पूजन के साथ प्रारंभ किया गया।

निशुल्क स्वास्थ्य शिविर शिवपुरी डीपीसी अशोक कुमार त्रिपाठी के विशेष सहयोग एवं कर्मचारी हितैषी शिविर में लगभग 143 शिक्षकों का निशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। इससे पूर्व भी प्रथम शिविर में लगभग 160 शिक्षकों का निशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण किया जाकर उन्हें स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया गया था। इस शिविर में शिवपुरी विकास खण्ड शिक्षाधिकारी राजेश कम्ठान एवं शिवपुरी बीआरसीसी वालकृष्ण ओझा, एफएलएन प्रशिक्षण प्रभारी ए.पी. माथुर की भी विशेष भूमिका रही। शिक्षकों के इस स्वास्थ्य शिविर में संयुक्त मोर्चा अध्यापक शिक्षक संघ के राजकुमार सरैया, पवन अवस्थी, स्नेह रघुवंशी, विपिन पचौरी, सुनील वर्मा, अमरदीप श्रीवास्तव, अरविन्द सरैया, बृजेन्द्र भार्गव, सुनील उपाध्याय, नगेन्द्र रघुवंशी, हेमंत खटीक, दिनकर नीखरा, दीवान शर्मा, लोकेश वोवल,मनोज खत्री, गणेश गुप्ता, कुलदीप भार्गव, संतोष सेंगर, संजय जैन, उम्मेद सगर, प्रदीप शर्मा, आदि की सक्रिय भूमिका से यह शिविर संपन्न हुआ।

प्रांतीय शिक्षक संघ म.प्र. शिवपुरी

रेडक्रास समिति की बैठक में कई नियुक्तियाँ

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी

सतना। जिला रेडक्रास समिति की सम्पन्न प्रबंध समिति और कार्यकारिणी समिति की बैठक में रेडक्रास समिति के कार्य संचालन के लिए विभिन्न पदों पर मनोनयन किया गया। रेडक्रास भवन कार्यालय में सभापति (चेयरमैन) की अध्यक्षता में सम्पन्न बैठक में कलेक्टर अनुराग वर्मा के निर्देशानुसार मनोनीत पदाधिकारी डॉ. नरेन्द्र शर्मा चेयरमैन, दिलीप अरोरा उप सभापति का स्वागत किया गया। रेडक्रास समिति के सचिव के रूप में डॉ. अरूण द्विवेदी, कोषाध्यक्ष के लिए रविशंकर गौरी, पीआरओ के लिए रमाकांत द्विवेदी को मनोनीत किया गया। समिति की बैठक में रेडक्रास की आय ब?ाने चिकित्सा कैम्प आयोजित करने तथा वृक्षा रोपण कराने का निर्णय लिया गया। इस मौके पर अशोक प्रताप सिंह, गोविन्द बड़ेरिया, अरूण मिश्रा, अशोक निगम, अजीज कुरैशी, जेपी शुक्ला भी उपस्थित रहे।

कच्चा तेल 81 डॉलर प्रति बैरल के करीब, पेट्रोल-डीजल की कीमत स्थिर

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम में लगातार उछाल है। ब्रेंट क्रूड 81 डॉलर प्रति बैरल और डब्ल्यूटीआई क्रूड 77 डॉलर प्रति बैरल के करीब है। हालांकि, सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनियों ने पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया है।

इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक शुक्रवार को दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये, डीजल 89.62 रुपये, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये, डीजल 94.27 रुपये, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये, डीजल 92.76 रुपये, चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर की दर पर उपलब्ध है।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में हफ्ते के पांचवें दिन शुरुआती कारोबार में ब्रेंट क्रूड 0.77 डॉलर यानी 0.88 फीसदी की बढ़त के साथ 80.34 डॉलर प्रति बैरल पर ट्रेंड कर रहा है। वहीं, वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) क्रूड भी 0.70 डॉलर यानी 0.93 फीसदी उछलकर 76.35 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है।

एयर इंडिया ने 400 विमानों के इंजन का ऑर्डर दिया

नई दिल्ली। एयर इंडिया और सीएफएम इंटरनेशनल ने कंपनी के 400 छोटे विमानों के नए बेड़े के लिए लीप इंजन के ऑर्डर को अंतिम रूप दे दिया है। इन इंजनों में 210 एयरबस ए320/ए321 नियो और 190 बोइंग 737 मैक्स फैमिली एयरक्राफ्ट शामिल हैं। सीएफएम ने एक विज्ञप्ति में कहा, दोनों कंपनियों ने एक बहु-वर्षीय सेवा समझौते पर भी हस्ताक्षर किए, जो एयरलाइन के लीप इंजनों के

पूरे बेड़े को कवर करेगा। इस आदेश की घोषणा पहली बार फरवरी में की गई थी। एयर इंडिया 2002 से सीएफएम ग्राहक है जब उसने सीएफएम 56-5बी इंजनों से संचालित ए320 नियो विमानों का संचालन शुरू किया था।

FTX ने अपने संस्थापक व पूर्व अधिकारियों के खिलाफ दर्ज किया मुकदमा, एक अरब डॉलर का दावा

वाशिंगटन। एफटीएक्स ट्रेडिंग ने शुक्रवार को क्रिप्टोक्यूरेंसी एक्सचेंज के संस्थापक सैम बैंकमैन-फ्राइड और अन्य पूर्व अधिकारियों पर मुकदमा दायर किया, जिसमें एफटीएक्स के दिवालिया होने से पहले कथित तौर पर दुरुपयोग किए गए 1 अरब डॉलर से अधिक की भरपाई करने की मांग की गई है। डेलावेयर दिवालियापन अदालत में दायर शिकायत में प्रतिवादी के रूप में कैरोलीन एलिसन का भी नाम है, जिन्होंने बैंकमैन-फ्राइड के अलामेडा रिसर्च हेज फंड का नेतृत्व

किया था। इनके अलावे पूर्व एफटीएक्स प्रौद्योगिकी प्रमुख ज़िज़ियाओ गैरी वांग और एफटीएक्स के पूर्व इंजीनियरिंग निदेशक निषाद सिंह के खिलाफ भी मुकदमा दर्ज किया गया है। एफटीएक्स ने कहा कि प्रतिवादियों ने लगातार लक्जरी कोंडोमिनियम, राजनीतिक योगदान, सट्टा निवेश और अन्य निजी फायदे से जुड़ी परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए धन का दुरुपयोग किया, जो कि इतिहास में सबसे बड़ी वित्तीय धोखाधड़ी में से एक का कारण बना।

ईपीएफओ से मई महीने में 16.30 लाख सदस्य जुड़े

नई दिल्ली। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) से इस वर्ष मई महीने में 16.30 लाख सदस्य जुड़े हैं। श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने जारी आंकड़ों में यह जानकारी दी है।

श्रम मंत्रालय की ओर जारी आधिकारिक आंकड़ों में बताया गया कि इस साल मई में 16.30 लाख सदस्य जुड़े हैं। आंकड़ों के मुताबिक मई महीने में 3,673 प्रतिष्ठानों ने अपने कर्मचारियों को ईपीएफओ के सामाजिक सुरक्षा दायरे में शामिल किया है। मंत्रालय के मुताबिक मई में ईपीएफओ से करीब 8.83 लाख नए सदस्य जुड़े हैं, जो पिछले छह महीनों का

उच्चतम स्तर है।मंत्रालय के मुताबिक नए अंशधारकों में से 56.42 फीसदी हिस्सेदारी 18 से 25 वर्ष के उम्र समूह के कर्मचारियों की है। हालांकि, मई में करीब 11.41 लाख अंशधारक ईपीएफओ से हटे, लेकिन वे दोबारा इससे जुड़ भी गए। आंकड़ों के मुताबिक मई में पहली बार ईपीएफओ का हिस्से बनने वाले 8.83 लाख नए कर्मचारियों में से करीब 2.21 लाख संख्या महिलाओं की थी। श्रम मंत्रालय के मुताबिक राज्यों के स्तर पर महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, हरियाणा और गुजरात शुद्ध अंशधारकों के मामले में आगे रहा है। इन पांच राज्यों की महीने में शुद्ध रूप से जुड़े अंशधारकों में हिस्सेदारी 57.85 फीसदी रही। यह संगठित रोजगार में आई तेजी को दर्शाता है।

एनसीएलटी ने फ्यूचर रिटेल की दिवाला प्रक्रिया पूरी करने की समय-सीमा 17 अगस्त तक बढ़ाई

नई दिल्ली। राष्ट्रीय कंपनी विधि अपीलीय न्यायधिकरण (एनसीएलएटी) ने कर्ज में डूबी कंपनी फ्यूचर रिटेल लिमिटेड (एफआरएल) के खिलाफ दिवालिया प्रक्रिया पूरी करने की समय-सीमा 17 अगस्त तक बढ़ा दी है। कंपनी ने शेयर बाजार को दी जानकारी में बताया कि एनसीएलटी की मुंबई पीठ ने एफआरएल को कॉरपोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया (सीआईआरपी) से 33 दिन के लिए बाहर रखने की अनुमति दे दी है। इसके तहत एफआरएल की सीआईआरपी को पूरा करने की अंतिम तिथि 17 अगस्त है।

इससे पहले एनसीएलटी की पीठ ने सीआईआरपी को पूरा करने के लिए 15 जुलाई तक 90 दिन की छूट दी थी। ऋण चूक के बाद 20 जुलाई, 2022 को एनसीएलटी ने एफआरएल के खिलाफ कॉरपोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया शुरू की गई थी। गौरतलब है कि सीआईआरपी आरंभ होने की तारीख से इसे 180 दिनों के भीतर पूरा करना होता है।

केंद्र ने गैर-बासमती चावल के निर्यात पर लगाई रोक, अधिसूचना जारी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने गैर-बासमती चावल के निर्यात पर रोक लगा दी है। विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने जारी अधिसूचना में यह जानकारी दी है। डीजीएफटी की ओर से जारी एक अधिसूचना के मुताबिक गैर-बासमती सफेद चावल (अर्ध-मिल्ड या पूरी तरह से मिल्ड चावल, चाहे पॉलिश किया हुआ हो या नहीं) की निर्यात नीति को मुक्त से प्रतिबंधित कर दिया गया है। हालांकि अधिसूचना में कहा गया है कि इस चावल की खेप को कुछ शर्तों के तहत निर्यात करने की अनुमति दी जाएगी।

अधिसूचना के मुताबिक जिन्हें ये अनुमति दी गई है, उसमें पहले से जहाज पर चावल की लदान शुरू होना शामिल है। डीजीएफटी की अधिसूचना में कहा गया है कि अन्य देशों को उनकी खाद्य सुरक्षा जरूरतों को

पूरा करने के लिए सरकार की मंजूरी और अन्य सरकारों के अनुरोध पर निर्यात की भी अनुमति दी जाएगी।

उल्लेखनीय है कि देश में पिछले कुछ समय से खाने-पीने की चीजों की कीमतों में तेजी आई है। खासतौर पर गेहूं, चावल, दूध और सब्जियों की कीमत तेजी से बढ़ी है। पिछले दस दिन में देशभर में चावल की कीमत में 20 फीसदी का इजाफा हुआ है।

जून तिमाही में इंफोसिस का मुनाफा 11 फीसदी बढ़कर 5,945 करोड़ रुपये रहा

नई दिल्ली। देश की दूसरी सबसे बड़ी सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) कंपनी इंफोसिस ने चालू वित वर्ष 2023-24 की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) के नतीजे का ऐलान कर दिया है। इंफोसिस का जून तिमाही में मुनाफा 11 फीसदी बढ़कर 5,945 करोड़ रुपये रहा है। इससे पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में कंपनी को 5,362 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था।

कंपनी ने जारी बयान में बताया कि वित वर्ष 2023-24 की पहली तिमाही में उसका एकीकृत शुद्ध लाभ 11 फीसदी बढ़कर 5,945 करोड़ रुपये रहा, जबकि पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में कंपनी को 5,362 करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ था। बहरहाल, कंपनी ने वृहद अनिश्चितताओं के बीच चालू वित्त वर्ष

2023-24 के लिए राजस्व वृद्धि अनुमान 3.5 फीसदी कर दिया है। इंफोसिस ने बताया कि वित वर्ष 2023-24 की पहली तिमाही के दौरान कंपनी की आमदनी 10 फीसदी बढ़कर 37,933 करोड़ रुपये पर पहुंच गई, जो इससे पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 34,470 करोड़ रुपये रही थी। इसके अलावा कंपनी का ऑपरेटिंग मार्जिन 20.8 फीसदी रहा है।

शुरुआती कमजोरी के बाद शेयर बाजार ने फिर बनाया तेजी का नया रिकॉर्ड

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में तेजी का सिलसिला आज लगातार चौथे कारोबारी दिन भी जारी रहा। शुरुआती कारोबार में बाजार में कुछ गिरावट जरूर आई, लेकिन पहले घंटे का कारोबार खत्म होने के बाद ही बाजार पर एक बार फिर खरीदार हावी हो गए। लगातार हो रही खरीदारी के सपोर्ट से सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों ने आज एक बार फिर रिकॉर्डों की झड़ी लगा दी। आज के कारोबार में सेंसेक्स और निफ्टी तो तेजी का रिकॉर्ड बनाते रहे, लेकिन ब्रॉडर मार्केट में बिकवाली का दबाव बना रहा। इसकी वजह से निवेशकों को 50 हजार करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान हो गया।

सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांक ने आज कारोबार की शुरुआत लाल निशान में की थी। इसके बावजूद ओपनिंग के मामले में इन दोनों सूचकांकों ने आज भी अभी तक का सबसे ऊंचा ओपनिंग लेवल हासिल किया। दिन के कारोबार में ये दोनों सूचकांक लगातार ऊपर चढ़ते गए। आज का कारोबार खत्म होने के थोड़ी देर पहले सेंसेक्स और निफ्टी ने ऑल टाइम हाई का एक बार फिर नया रिकॉर्ड कायम किया। इसके बाद दोनों सूचकांकों ने अभी तक के सबसे ऊंचे स्तर पर बंद होकर ऑल टाइम हाई क्लोजिंग का भी रिकॉर्ड बना लिया। आज के कारोबार में सेंसेक्स 67,500 अंक के ऊपर जाकर बंद हुआ। निफ्टी 20 हजार अंक के काफी करीब पहुंचकर बंद हुआ। दिनभर के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.71 प्रतिशत और निफ्टी 0.74 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुए।

आज के कारोबार के दौरान फार्मास्यूटिकल, एफएमसीजी और बैंकिंग सेक्टर के शेयरों में करीब 1 प्रतिशत की तेजी दर्ज की गई। इसी तरह इंफ्रास्ट्रक्चर, एनर्जी और ऑटोमोबाइल इंडेक्स में भी तेजी बनी रही। दूसरी ओर टेक, आईटी, पावर और कंज्यूमर ड्युरेबल्स सेक्टर के शेयरों में गिरावट का रुख बना रहा। ब्रॉडर मार्केट में बने दबाव के बावजूद बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.05 प्रतिशत की मामूली बढ़त के साथ बंद होने में सफल रहा। इसी तरह स्मॉल कैप इंडेक्स ने भी 0.19 प्रतिशत की तेजी के साथ आज के कारोबार का अंत किया।

आज ब्रॉडर मार्केट में हुई बिकवाली के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों को 50 हजार करोड़ रुपये से अधिक का चूना लग गया। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद घट कर 304 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। जबकि पिछले कारोबारी दिन यानी बुधवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 304.53 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 53 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हो गया।

आज दिनभर के कारोबार में बीएसई में 3,512 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 1,767 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 1,604 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 141 शेयर बिना किसी उतार चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,034 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 1,032 शेयर मुनाफा कमाकर हरे निशान में और 1,002 शेयर नुकसान उठाकर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 21 शेयर बढ़त के साथ और 9 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। जबकि निफ्टी में शामिल 50 शेयरों में से 36 शेयर हरे निशान में और 14 शेयर लाल निशान में बंद हुए।

बीएसई का सेंसेक्स आज 23.10 अंक की कमजोरी के साथ 67,074.34 अंक के स्तर पर खुला। कमजोरी के बावजूद सेंसेक्स की ओपनिंग का ये अभी तक का सबसे ऊंचा स्तर है। शुरुआती कारोबार में बाजार में बिकवाली का दबाव भी बना जिसकी वजह से ये सूचकांक 266.06 अंक लुढ़क कर 66,831.38 तक पहुंच गया, लेकिन पहले 1 घंटे का कारोबार होने के बाद बाजार में विदेशी निवेशकों ने चौतरफा खरीदारी शुरू कर दी, जिससे कुछ ही देर में इस सूचकांक ने न केवल रिकवरी कर ली, बल्कि तेजी से ऊपर चढ़ने लगा। बाजार में लगातार हो रही खरीदारी के सपोर्ट से ये सूचकांक 3 बजे के थोड़ी देर बाद 521.73 अंक की मजबूती के साथ 67,619.17 अंक के नए शिखर पर पहुंच गया।

पुनर्विकास के बाद धारावी 'अत्याधुनिक व विश्वस्तरीय शहर' बनेगा, जानें परियोजना पर क्या बोले गौतम अदाणी

नई दिल्ली। गौतम अदाणी ने मुंबई स्थित धारावी के पुनर्विकास के लिए अपना दृष्टिकोण साझा किया है। उन्होंने कहा है कि पुनर्विकास के बाद धारावी 21वीं सदी का आधुनिक और अत्याधुनिक शहर बनेगा। एक आलेख में अदाणी समूह के मुखिया ने 1970 के दशक के अंत में धारावी के साथ अनुभवों के बारे में भी बताया है। उन्होंने लिखा है कि उस दौरान वे धारावी में भारत की संस्कृतियों और भाषाओं के जीवंत मिश्रण से प्रभावित हो गए थे। बता दें कि नवंबर 2022 में अदाणी प्रॉपर्टीज ने धारावी के पुनर्विकास से जुड़ी परियोजना की बोली हासिल की थी। अदाणी ने अपने आलेख में बताया है कि कैसे यह परियोजना अपने पैमाने और जटिलता के कारण अद्वितीय है। उन्होंने लिखा कि इस योजना में लगभग दस लाख लोगों को फिर से बसाना और धारावी के विभिन्न व्यवसायों का पुनर्वास शामिल होगा।

अदाणी समूह के मुखिया ने धारावी के साथ अपना जुड़ा साझा किया

अपने आलेख में उन्होंने लिखा, +पूर्व हैवीवेट विश्व बॉक्सिंग चैंपियन माइक टायसन एक समय अपने जीवनकाल में भारत के दो स्थानों पर जाने के लिए विशेष तौर पर इच्छुक थे। एक ताजमहल और दूसरा धारावी। दुनिया की सबसे बड़ी

झुग्गी बस्ती के तौर पर पहचान रखने वाली धारावी से मेरा पहला वास्ता 70 के दशक के अंत में तब पड़ा जब देश के तमाम युवाओं की तरह मैंने भी जीवन में कुछ कर गुजरने का सपना लिए मुंबई में कदम रखा। यह सपना हीरों के कारोबार में कुछ बड़ा कर दिखाने का था। आपाधापी के उस दौर में ही मेरा वास्ता धारावी से भी पड़ा। एक ऐसा रहवासी इलाका जहां इंसानों की भीड़ घोर अमानवीय और प्रतिकूल परिस्थितियों में रहते हुए अपने आपको और अपने सपनों को जिंदा रखने के लिए लगातार संघर्षरत रहती है। उस समय भी धारावी एक ऐसा जन समुद्र था, जिसमें देश भर की विविध मान्यताएं, संस्कृतियां और भाषाएं संकरी और लगभग हवा विहीन गलियों में आहत और अचंभित कर देने वाले दृश्य आम हैं। यहां रहने वालों से आपके सवाल का उत्तर देश की किसी भी भाषा में तुरंत मिल जाएगा लेकिन उन्हें साफ-सफाई, शुद्ध पानी और स्वच्छ हवा यहां कब मिलेगी, इसका उत्तर दशकों तक उन्हें नहीं मिला।

धारावी की पुनर्विकास परियोजना देश की संवेदनशीलता का नया अध्याय

अदाणी समूह के मुखिया ने लिखा, यह हमारे लिए सिर्फ एक व्यापारिक परियोजना नहीं है, बल्कि उससे कहीं बढ़कर है। सच कहूं तो इसके माध्यम से समाज को वह सब कुछ लौटाने का विनम्र प्रयास है जो हमारे समूह ने विगत दशकों में समाज से ही प्राप्त किया है।÷ उन्होंने लिखा है कि इस पुनर्वास कार्यक्रम के माध्यम से देश की संवेदनशीलता का नया अध्याय शुरू हो रहा है। गौतम अदाणी ने लिखा है, 'हमारा काम पूरा होने के बाद, अगर माइक टायसन फिर धारावी का दौरा करते हैं, तो वह उस धारावी को पहचान नहीं पाएंगे, जो उन्होंने पहले देखी थी। लेकिन मुझे विश्वास है कि उन्हें धारावी की आत्मा फिर भी हमेशा की तरह जीवंत मिलेगी। ईश्वर ने चाहा तो डैनी बॉयल जैसे लोगों को पता चल जाएगा कि नई धारावी करोड़पति पैदा कर रही है, वह भी स्लमडॉग कहलाए बिना।' अदाणी ने आखिर में दुष्यंत कुमार की यह पंक्तियां भी साझा की है।

पीएमएलए में संशोधन से जुड़े मामले में होगी सुनवाई, CJI की बेंच ने सूचीबद्ध करने के दिए निर्देश

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट भ्रष्टाचार निरोधक कानून के उस प्रावधान की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली जनहित याचिका को जल्द सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करने पर सहमत हो गया है जिसमें भ्रष्टाचार के एक मामले में सरकारी अधिकारी के खिलाफ जांच शुरू करने के लिए पूर्व मंजूरी लेने को अनिवार्य किया गया है। प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने वकील प्रशांत भूषण की इस दलील का संज्ञान लिया कि जनहित याचिका को सुनवाई के लिये सूचीबद्ध किये जाने की जरूरत है क्योंकि नोटिस 26 नवंबर 2018 को जारी किया गया था।

शीर्ष अदालत ने 2018 में जनहित याचिका पर जारी किया था नोटिस

प्रधान न्यायाधीश ने कहा, 'मैं सुनवाई की तारीख आगे

बढ़ाऊंगा।' शीर्ष अदालत ने 2018 में जनहित याचिका पर नोटिस जारी करने के बाद 15 फरवरी, 2019 को केंद्र से चार दिनों के भीतर जवाब दाखिल करने को कहा था और उसके बाद याचिका को पीठ के समक्ष सूचीबद्ध नहीं किया गया। तत्कालीन प्रधान न्यायाधीश रंजन गोगोई की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा था कि जनहित याचिका दायर करने वाला एनजीओ सेंटर फॉर पब्लिक इंटरेस्ट लिटिगेशन (सीपीआईएल) केंद्र के जवाब दाखिल करने के एक सप्ताह के भीतर अपना प्रत्युत्तर दाखिल कर सकता है। याचिका में भ्रष्टाचार निरोधक कानून की संशोधित धारा 17ए (1) की वैधता को चुनौती दी गई है।

शीर्ष अदालत दो बार संशोधन को असंवैधानिक करार दे चुकी है

याचिका में कहा गया है कि संशोधित प्रावधान भ्रष्टाचार के मामलों में सरकारी कर्मचारियों के खिलाफ जांच शुरू करने के लिए नियुक्ति प्राधिकारी की पूर्व मंजूरी को आवश्यक बनाता है। याचिका में आरोप लगाया गया है कि संशोधित धारा ने भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ जांच को रोक दिया और यह सरकार की ओर से ऐसा प्रावधान पेश करने का तीसरा प्रयास था, शीर्ष अदालत पहले ही दो बार इसे असंवैधानिक करार दे चुकी है।

वेदांता से डील तोड़ने के बाद फॉक्सकॉन ने शुरू की नई तैयारी

नई दिल्ली। कर्नाटक और तमिलनाडु के आर्थिक परिदृश्य के लिए एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम में फॉक्सकॉन के सीईओ ब्रांड चेंग ने कर्नाटक मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन से क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निवेश योजना पर चर्चा करने के लिए मुलाकात की। मुलाकात के दौरान फॉक्सकॉन इंडस्ट्रियल इंटरनेट (एफआईआई) की ओर से राज्य की अर्थव्यवस्था में 8,800 करोड़ रुपये के निवेश पर चर्चा की गई। स्टालिन के अलावा, तमिलनाडु के उद्योग मंत्री टीआरबी राजा भी राज्य में आईफोन निर्माता की निवेश योजनाओं पर चर्चा करने के लिए बैठक में मौजूद थे। कर्नाटक कर्नाट सीएम के साथ बातचीत में भी फॉक्सकॉन इंडस्ट्रियल इंटरनेट (एफआईआई) की 8,800 करोड़ रुपये की निवेश योजना पर चर्चा की गई। इस पर्याप्त निवेश से प्रौद्योगिकी क्षेत्र को महत्वपूर्ण बढ़ावा मिलने और स्थानीय कार्यबल के लिए 14,000 से अधिक रोजगार के अवसर पैदा होने की उम्मीद है। राज्य के वाणिज्य और उद्योग मंत्री, एमबी पाटिल ने आगामी निवेश के बारे में अपना उत्साह व्यक्त करने के लिए ट्विटर का सहारा लिया, राज्य के लिए इसके संभावित लाभों पर प्रकाश डाला। पाटिल ने निवेश और रोजगार सृजन के प्रभावशाली आंकड़ों का खुलासा करते हुए ट्वीट किया, 'कर्नाटक #Fo&conn औद्योगिक इंटरनेट (#FII) कंपनी के मेगा निवेश, तकनीकी क्षेत्र और नौकरी के अवसरों को बढ़ावा देने का स्वागत करता हैFo&conn: वेदांता से डील तोड़ने के बाद फॉक्सकॉन ने शुरू की नई तयारी, तमिलनाडु व कर्नाटक के सीएम से मिले सीईओ।

शराब पार्टी के बाद महिला से बहनोई ने की छेड़छाड़, पति से शिकायत की तो पीड़िता को ही पीटा

ग्वालियर । ग्वालियर के सिटी सेंटर इलाके में रहने वाली एक महिला के साथ उसके बहनोई ने ही छेड़छाड़ की है। महिला अपने कमरे में थी, तभी उसका पति और बहनोई शराब पार्टी कर रहे थे। बहनोई उसके कमरे में घुस आया और उसके साथ छेड़छाड़ की। महिला ने शोर मचाया तो वह भाग गया, इसके बाद महिला ने अपने पति से शिकायत की। इस पर महिला के पति ने उसके ही साथ मारपीट कर दी। इस मामले में यूनिवर्सिटी थाना पुलिस ने एफआइआर दर्ज कर ली है।यूनिवर्सिटी थाना क्षेत्र के अंतर्गत महलगांव इलाके में रहने वाला युवक कुछ समय पहले ही अपनी पत्नी के साथ छत्तीसगढ़ से ग्वालियर आया है। वह यहां नौकरी करता है। महिला का पति बीते रोज अपने बहनोई के साथ शराब पार्टी कर रहा था। उसकी पत्नी घर पर ही थी। शराब के नशे में बहनोई पत्नी के कमरे में पहुंच गया और छेड़छाड़ करने लगा। जब महिला की नींद खुली तो उसने शोर मचाया। इसके बाद महिला ने अपने पति को बताया तो उसने पत्नी को ही पीटा।

प्रियंका की सभा से संकेत, कर्नाटक की तरह भ्रष्टाचार बेरोजगारी और महंगाई को मुद्दा बनाएगी कांग्रेस

ग्वालियर,।कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी की शुक्रवार को मेला ग्राउंड में सभा से संकेत मिले कि कांग्रेस कर्नाटक की तरह भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और महंगाई को विधानसभा चुनाव में प्रमुख मुद्दा बनाएगी। लोगों को बताएगी कि कैसे जनादेश से 2018 के चुनाव में बनी कांग्रेस सरकार को भाजपा ने गिराया। इसके साथ सस्ती बिजली, 500 रुपये में गैस सिलेंडर, किसानों का कर्जा माफ, महिलाओं के खाते में 1500 रुपये भेजने जैसी योजनाओं का प्रलोभन देगी।कांग्रेस भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और महंगाई के मुद्दे को कर्नाटक में भुना चुकी है। मध्य प्रदेश के चुनाव में इन्हीं मुद्दों पर पूरी ताकत लगा देगी। यह की जीत कांग्रेस को दिल्ली में मजबूत आधार प्रदान करेगी और

विपक्षी गठजोड़ में सम्मानजनक भूमिका दिलाने वाली होगी।मणिपुर मामले पर भी पीएम ने की राजनीति - प्रियंका गांधी, बोलीं- विपक्ष के नेताओं का किया अपमानमेला ग्राउंड की सभा में प्रियंका गांधी वाड्रा के भाषण से प्रदेश में होने वाले चुनाव के लिए स्पष्ट दिशा नजर आ रही थी। प्रियंका गांधी 35 मिनट के भाषण में इसी मुद्दे पर बोलीं। जनता से जुड़े मुद्दों से दाएं-बाएं जाने से कांग्रेस को नुकसान हो सकता है। हालांकि अन्य वक्ता जरूर इधर-उधर की बातों पर ताल ठोकते नजर आए।जबलपुर के बाद ग्वालियर-चंबल अंचल में प्रियंका गांधी की सभा से संकेत मिलते हैं प्रदेश के चुनाव में राहुल गांधी की बजाए प्रियंका गांधी कांग्रेस का राष्ट्रीय चेहरा होंगीं। पूर्व मुख्यमंत्री कमल नाथ के पुत्र नकुल नाथ ने अपने संबोधन में कहा आप तो मध्य प्रदेश को गोद ले लें। सभा से पहले शहरभर में लगे होर्डिंग्स में राहुल गांधी कम नजर आ रहे हैं। प्रियंका गांधी सभा में पूर्ण सादगी के साथ पहुंची और आम महिलाओं की तरह नजर आईं। उनका भाषण के हर शब्द आम जनता से जुड़ा हुआ नजर आ रहा था।चार महीने में खुल गई जेयू के शौचालय के नवीनीकरण की पोल, दुर्गम और जलभराव से परेशान हैं सिंह का उपयोग कांग्रेस सार्वजनिक मंचों पर नहीं करेगी। हालांकि कांग्रेस के प्रमुख रणनीतिकार दिग्विजय सिंह ही होंगे। प्रियंका गांधी की सभा के सूत्रधार दिग्विजय सिंह नजर आए। मंच पर बैठे भी, लेकिन भाषण नहीं दिया। यानी चुनाव में दिग्विजय पर्दे के पीछे रहेंगें।

चार महीने में खुल गई जेयू के शौचालय के नवीनीकरण की पोल, दुर्गम और जलभराव से परेशान हैं लोग

ग्वालियर.। हाल ही में ए प्लस प्लस का तमगा हासिल किए हुए जीवाजी विश्वविद्यालय के शौचालय रखरखाव के अभाव में बदहाल पडे हैं। खास तौर पर प्रशासनिक भवन के प्रथम तल पर बने शौचालय। हालांकि जीवाजी विश्वविद्यालय ने 4 महीने पहले लाखों रुपए खर्च कर इनका नवीनीकरण करवाया था, लेकिन महज 4 महीने में ही नवीनीकरण की पोल खुल कर सामने आ गई है। रखरखाव में लापरवाही की मार झेल रहे शौचालय में ब्लॉकेज और टूट-फूट जगह जगह देखने मिल जाएगी । कुछ समय पहले एनएसयूआई के छात्र नेताओं ने इस मामले में सुधार कार्य कराने के लिए विश्वविद्यालय प्रबंधन को ज्ञापन भी सौंपा था लेकिन इसके बावजूद भी कोई परिवर्तन नहीं आया है।लाखों रुपए खर्च करके जीवाजी विश्वविद्यालय के परिसर में मौजूद विभिन्न विभागों और प्रशासनिक भवन में बने शौचालय इस समय लचर स्थिति में है कहीं दुर्गंध से हालत खराब है तो कहीं गंदा पानी भरा रहता है और तो और कहीं कहीं तो शौचालय के यूरिनल ही टूटे पडे हैं 7 कुछ छात्रों ने इस की शिकायत अधिकारियों से की है लेकिन उस पर भी कोई सुनवाई नहीं हो रहीयह भी पढ़ेंआने जाने वाले भी परेशानजीवाजी विश्वविद्यालय में दिन भर में हजारों लोगों का आना जाना होता है ऐसे में जो लोग विश्वविद्यालय की प्रशासनिक भवन में शौचालय के उपयोग करने के लिए जाते हैं उन्हें भारी समस्या का सामना करना पड़ता है टूटा हुआ शौचालय,जलभराव और गंदी बदबू से परेशान होकर लोग फिर ऐसी स्थिति में इन शौचालय को उपयोग करने से बचते नजर आते हैं विश्वविद्यालय परिसर के भीतर मौजूद जितने भी शौचालय हैं सभी की नवीनीकरण, रंग रोगन का काम अभी कुछ महीने पहले ही हुआ था। जिसमें जीवाजी विश्वविद्यालय ने लगभग 60 से 70 लाखों रुपए खर्च भी किए थे। लेकिन इतना खर्चा करने के बाद में सभी शौचालय बने अपनी पुरानी स्थिति में आ गए हैं। इसके पीछे का कारण इन शौचालयों के रखरखाव की कमी माना जा सकता है।

निष्क्रिय हुआ मानसून, जुलाई में मई जैसी गर्मी कर रही परेशान

ग्वालियर.। शहर में मानसून का सिस्टम निष्क्रिय होने के कारण जुलाई के महीने में भी मई जैसी गर्मी लोगों को परेशान कर रही है। वहीं उमस से लोग बदहाल हुए जा रहे हैं। पिछले दो दिन से मौसम साफ है। शहर के आसमान से बादल गायब हैं, जिससे तापमान में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। शुक्रवार को पारा 38 डिग्री सेल्सियस के करीब चला गया। तेज धूप और भीषण उमस लोगों का पसीना छुड़ा रही है। मौसम विभाग के अनुसार ग्वालियर-चंबल संभाग में अगले तीन दिन तक बारिश की उम्मीद कम है। हालांकि स्थानीय प्रभाव से अंचल में कहीं-कहीं गरज-चमक के साथ हल्की बारिश हो सकती है।दरअसल, पिछले कुछ दिनों से गुना-शिवपुरी के पास से गुजर रही मानसून की अक्षीय रेखा अब राजस्थान के

जैसलमेर, कोटा के अलावा मध्यप्रदेश के सागर और ओडिशा में बने कम दबाव क्षेत्र से होते हुए बंगाल की खाड़ी की ओर जा रही है। ग्वालियर-चंबल संभाग के आसपास कोई मानसून सिस्टम मौजूद नहीं है। इसके चलते अगले तीन दिन तक बारिश की उम्मीद कम है। हालांकि स्थानीय प्रभाव से अंचल में कहीं-कहीं हल्की बारिश हो सकती है। 24 जुलाई को बंगाल की खाड़ी में एक ताजा कम दबाव का क्षेत्र विकसित होने की उम्मीद है। इसके प्रभाव से अंचल में बारिश की उम्मीद की जा रही है। इससे पहले शुक्रवार को सुबह से ही मौसम लगभग शुष्क था। आसमान में हल्के फुल्के बादल छाए थे। इसके चलते सूरज ने तेवर दिखाने शुरू किए, तो सुबह 11:30 बजे ही तापमान 36 डिग्री सेल्सियस के करीब पहुंच गया। सुबह से ही तेज धूप और उमस की वजह से शहरवासियों को भीषण गर्मी का सामना करना पड़ा। दोपहर में जो लोग घर से बाहर निकले वे पसीना-पसीना होते रहे।

दंपती को धमकाते थे स्वजन कोर्ट ने कहा-पुलिस सुरक्षा दे

ग्वालियर । हाईकोर्ट ने अंतरजातीय विवाह करने वाले दंपति कामेश और रानी की याचिका पर सुनवाई करते हुए दोनों को पुलिस सुरक्षा दिए जाने के निर्देश दिए है। याचिकाकर्ताओं की ओर से पैरवी करने वाले अधिवक्ता रतन निगम ने बताया कि दोनों याचिकाकर्ता अलग-अलग जातियों से हैं। दोनों ने प्रेम विवाह किया था, जिस पर उनके परिजनों को आपत्ति थी। उनके परिजन आए दिन दोनों को धमकाते भी थे। अपनी सुरक्षा के लिए दोनों ने हाईकोर्ट में याचिका दायर की, जिस पर हाईकोर्ट ने एसपी को दोनों याचिकाकर्ताओ को पुलिस सुरक्षा देने के लिए निर्देश दिए है। बता दें कि इस मामले के दोनों याचिकाकर्ता एक दूसरे के साथ 3 साल से प्रेम संबंध में थे। 27 जून 2023 को दोनों ने खिड़की मोहल्ला के आर्य वैदिक समाज संस्थान में दोनों ने शादी कर ली थी।ग्वालियर में एक युवक को बस में से खींचकर कुछ युवकों ने बेरहमी से पीटा। उसे बस में से खींचकर सड़क पर उतारा और लाठियों से हमला कर दिया। इस घटना का वीडियो इंटरनेट मीडिया पर बहु प्रसारित हुआ है। जिस युवक के साथ मारपीट की जा रही है पहले उसे पकड़ने के लिए हमलावर दौड़े। वह कांग्रेस की आम सभा में से शामिल होकर लौट रहे लोगों की बस में चढ़ा गया। इसके बाद हमलावर बस में से उसे खींच लाए और सड़क पर लाठियों से पीटा। पीछे चल रही एक कार में सवार युवक ने यह वीडियो अपने मोबाइल में रिकॉर्ड कर लिया और इंटरनेट मीडिया पर अपलोड कर दिया। प्रारंभिक पड़ताल में सामने आया है कि जिस युवक के साथ मारपीट की जा रही है वह मेला ग्राउंड में डेरे में रहता है।

पांच ठगों ने दूसरे की जमीन दिखाकर फर्जी रजिस्ट्री की; चार गिरफ्तार, एक फरार

ग्वालियर। में शातिर ठग गिरोह ने एक प्रॉपर्टी कारोबारी को सस्ती जमीन दिलाने का झांसा देकर 38 लाख 50 हजार रुपए की चपत लगा दी। इस वारदात को अंजाम पांच ठगों ने दिया, जिसमें दो ने उन्हें झांसे में लिया और एक ने फर्जी आधार कार्ड बनाया तथा दो ने फर्जी पिता-पुत्र बनकर रजिस्ट्री की।घटना का पता उस समय चला जब प्रॉपर्टी कारोबारी जमीन पर कब्जा लेने पहुंचा तो जमीन के असल मालिक उसके सामने आकर खड़े हो गए और मामले का पता चलते ही पीड़ित थाने पहुंचा और शिकायत पुलिस अफसरों से की। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने चार ठगों को दबोच लिया, जबकि एक फरार हो गया। पुलिस पकड़े गए ठगों से पूछताछ कर रही है।

यह है पूरा मामला–जानकारी के मुताबिक मुरैना निवासी रामस्वरूप तोमर पेशे से एक प्रॉपर्टी कारोबारी है और अशोक तिवारी के साथ पार्टनरशिप में जमीन खरीदने व बेचने का काम करते है। उनके इस काम में साभाराम गुर्जर और उनका बेटा आकाश गुर्जर दलाली कर मदद करते हैं। कुछ समय पूर्व आकाश और साभाराम उनके पास आए और बताया कि एक जमीन का सौदा आया है और जमीन मौके पर है और सस्ती मिल रही है। इस पर वह जमीन देखने के लिए भदरौली आए।

जमीन की अच्छी लोकेशन होने पर वह सौदा के लिए तैयार हुए तो आकाश व साभाराम ने उन्हें जमीन के मालिक विजय राम और उनके बेटे प्रमोद धोबी से मिलवाया। जमीन का सौदा साढ़े 48 लाख रुपए में हुआ था। इसके बाद उन्होंने 15 लाख नगद देकर आठ-आठ लाख रुपए के चेक दे दिए। इसके बाद वह नौ लाख रुपए और उनसे ले गए। इसके बाद 10 लाख 90 हजार रुपए देकर जमीन की रजिस्ट्री में खर्चा आया।

कब्जा लेने पहुंचे तो खुला मामला–रजिस्ट्री के बाद जब वह जमीन पर कब्जा लेने पहुंचे तभी दो युवक आए और बताया कि यह जमीन उनकी है और जब उन्होंने रजिस्ट्री कराने की बात कही तो युवकों ने बताया कि इस जमीन के मालिक विजयराम और प्रमोद हैं। इसका पता चलते ही उनके पैरों तले जमीन निकल गई। मामला समझ में आते ही थाने पहुंचे और मामले की शिकायत की। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया।

चार पकड़े, एक फरार–पुलिस ने इस मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए आकाश गुर्जर, प्रमोद कुशवाह, विकास गोस्वामी, लीलाधर शाक्य को पकड़ लिया, जबकि मामले का खुलासा होने का पता चलते ही साभाराम गुर्जर फरार हो गया। पुलिस ने पूछताछ की तो खुलासा हुआ कि लीलाधर शाक्य को विजयराम बनाया और प्रमोद कुशवाह को उसका बेटा प्रमोद प्रजापति बनाया गया था और प्रमोद ने ही फर्जी आईडी तैयार की थी। जबकि विकास ने भदरौली में जमीन तलाशी थी। पुलिस ने उन्हें हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है कि इस तरह और किसी के साथ भी ठगी तो नहीं की है।

फरार आरोपी को पकड़ने पुलिस टीम रवाना–थाना प्रभारी पंकज त्यागी का कहना है कि एक प्रॉपर्टी कारोबारी को नकली आदमी खड़ा कर जमीन की रजिस्ट्री कर ठगी करने वाले चार आरोपियों को पकड़ लिया है, जबकि एक अभी फरार है। पकड़े गए आरोपियों से पूछताछ की जा रही है। साथ ही फरार पांचवें आरोपी को पकड़ने के लिए पुलिस टीम रवाना कर दी है,

धर्म, जाति और संप्रदाय का भेदभाव भुलाकर देश हित में काम करने वाले आगे आएं

धार. साफ-सुथरी व स्वच्छ राजनीति को लेकर पत्रिका का शुरू किया जनप्रहरी अभियान युवाओं को सबसे ज्यादा पसंद आ रहा है। उनका सोचना है कि देश और समाज को चलाने के लिए ऐसे लोगों को आगे आना चाहिए, जो समाज में बिना भेदभाव के सभी के हित में काम करें। आज राजनीति दल जाति और संप्रदायिक के भेदभाव से कई धड़ों में बंटे हैं। यह सोच बदलनी चाहिए। धर्म, जाति व संप्रदाय का भेदभाव भुलाकर देश में काम करें। राजनीति में महिलाओं की बढ़ाएं भागीदारी राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना चाहिए। क्योंकि महिलाएं घर व परिवार की बागडोर को अच्छे से संभालती है। राजनीति में महिलाओं का नेतृत्व बढने से भ्रष्टाचार मुक्त समाज की परिकल्पना साकार हो सकेगी। कार्यक्रम में एनसीसी केडर की 35 छात्राओं ने हिस्सा लिया। अंत में प्रो. ज्योति बमणके ने सभी को मतदान की शपथ दिलाई

पुष्पांजली टुडे
आम सूचना / कोर्ट नोटिस
साइज फिक्स रूपये
8×4 cm 1120
10×4 cm 1400
12×4 cm 1680
अन्य साइज 50/- sq.cm.
बुकिंग के लिए संपर्क करें
0751-4050784
8269307478

पुष्पांजली टुडे
गुमशुदा / खोया -पाया
नाम परिवर्तन
साइज फिक्स रूपये
8×4 cm 1050
अन्य साइज 50/- sq.cm.
बुकिंग के लिए संपर्क करें
0751-4050784
8269307478

उपलब्ध हैं।
फाइनेंस / लोन / होम लोन
ग्वालियर मुरैना बामोर गोहद मालनपुर डबरा इत्यादि जगह में आप मकान खरीदने ओर प्लॉट खरीद कर मकान बनाने के लिए लोन के हैं जरुरत तो करें हमसे संपर्क।
संपर्क करें
07974596469

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478